Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

(सूरत आले-इम्रान आयत :74-75)

अनुवाद: तू कह दे निसन्देह फज़्ल अल्लाह के हाथ में है। वह जिस को चाहता है देता है और अल्लाह बहुत व्यापकता प्रदान करने वाला और चिरस्थायी ज्ञान रखने वाला है और अपनी रहमत के लिए जिसे को चाहे विशेष कर लेता है। और अल्लाह बहुत बड़े फज़्ल वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 19

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

3 रमज़ान 1440 हिजरी कमरी 9 हिजरत 1397 हिजरी शमसी 9 मई 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

रसूले अकरम सिल्ली अल्लाह अलैहि वसल्लम ने एक तो मौजूदा जमाअत अर्थात जमाआत सहाबा कराम रज़ि का तज़किया किया और एक आने वाली जमाअत का जिसकी शान में لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (अल्जुम्अ: :4) आया है।

मसीह तथा महदी कोई दो अलग व्यक्ति नहीं। उनसे मुराद एक ही है। महदी हिदायत प्राप्त से मुराद है। कोई यह नहीं कह सकता कि मसीह महदी नहीं।

आसार(सहाबा तथा इस्लामी बुज़ुर्गों के कथनों) में है कि आने वाले मसीह की एक यह फ़ज़ीलत होगी कि वह कुरआन के फ़हम और मआरिफ़ वाला होगा

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मसीह तथा महदी

हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने फ़रमाया कि एक मेरा ज़माना बरकत वाला है एक आने वाले मसीह तथा महदी का। मसीह तथा महदी कोई दो अलग व्यक्ति नहीं। उनसे मुराद एक ही है। महदी हिदायत प्राप्त से मुराद है। कोई यह नहीं कह सकता कि मसीह महदी नहीं। महदी मसीह हो या ना हो लेकिन मसीह के महदी होने से इन्कार करना मुसलमान का काम नहीं। असल में अल्लाह तआला ने ये दो शब्द गाली गलौच के मुक़ाबिल बतौर तारीफ (प्रशंसा) के रखे हैं कि वह काफ़िर, ज़ाल (गुमराह), मुज़िल्ल (गुमराह करने वाला) नहीं बल्कि महदी है चूँकि उस के इल्म में था कि आने वाले मसीह महदी को दज्जाल तथा गुमराह कहा जाएगा ,इसलिए उसे मसीह तथा महदी कहा गया। दज्जाल का सम्बन्ध اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ (अल्आराफ 177) से था और मसीह को आसमानी रफ़ा होना था। अत: जो कुछ अल्लाह तआला ने चाहा था उस की पूर्णता दो ही ज़मानों में होनी थी। एक आप का ज़माना और एक आख़री मसीह तथा महदी का ज़माना। अर्थात एक ज़माना में तो क़ुरआन और सच्ची सिक्षा नाज़िल हुई लेकिन इस शिक्षा पर फ़यज अअ़वज (अन्धकार के जमाने) के ज़माना ने पर्दा डाल दिया,जिस पर्दा का उठाया जाना मसीह के ज़माना में मुक़द्दर था। जैसे कि फ़रमाया कि रसूल अकरम सिल्ली अल्लाह अलैहि वसल्लम ने एक तो मौजूदा जमाअत अर्थात जमाआत सहाबा कराम रज़ि का तज़किया किया और एक आने वाली जमाअत का जिसकी शान में لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (अल्जुम्अ: :4) आया है। अत: यह ज़ाहिर है कि खुदा ने बिशारत दी कि ज़लालत के वक़्त अल्लाह तआला इस धर्म को नष्ट ना करेगा बल्कि आने वाले ज़माना में ख़ुदा तआला कुर्आन की हकीकतों को खोल देगा। आसार(सहाबा तथा इस्लामी बुज़ुर्गों के कथनों) में है कि आने वाले मसीह की एक यह फ़ज़ीलत होगी कि वह कुरआन के फ़हम और मआरिफ़ वाला होगा और सिर्फ क़ुरआन से इस्तिंबात करके लोगों को उनकी ग़लतीयों से सुचित करेगा जो क़ुरआन की हकीकतों से अज्ञानता से लोगों में पैदा हो गई हूँ ।

मूसवी सिलिसला तथा महमम्दी सिलिसला में समानता

कुरआन करीम में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मूसा का मसील ठहरा कर फरमाया

اِنَّآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا ۢ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا

(सूरह अल्मुज़म्मिल 16) अर्थात एक रसूल भेजा जैसा मूसा को फिरऔन की तरफ भेजा ह। हमारा रसूल मूसा का मसील है एक अन्य स्थान पर फरमाया कि

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

(अन्नूर 56)कि इस मसील मूसा के खुलफ़ा भी इसी सिलसिला से होंगे जैसे कि मूसा के खुलफ़ा सिलसिला से आए। इस सिलसिला का समय चौदह सौ बरस तक रहा बराबर खलीफ़ा आते रहे। यह एक अल्लाह तआला की तरफ़ से पेशगोई थी कि जिस तरह से पहले सिलसिला का आरम्भ हुआ वैसे ही इस सिलसिला का आरम्भ होगा। अर्थात जिस तरह मूसा ने आरम्भ में प्रतापी निशान दिखलाए और फ़िरऔन से छुड़ाया , इसी तरह आने वाला नबी भी मूसा अलैहिस्सलाम की तरह होगा।

فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا ۝ السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌ ۢ بِهٖ ۭ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا

(सूरह अल्मुज़िम्मल 18,19)अर्थात जिस तरह हम ने मूसा को भेजा था अत: रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वक़्त अरब के कुफ़्फ़ार भी फ़िरऔनीयत से भरे हुए थे। वे भी फ़िरऔन की तरह रुके नहीं जब तक उन्होंने प्रतापी निशान ना देख लिया। अत: आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के

शेष पृष्ठ 12 पर

125 वां जलसा सालाना कादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने 125वें जलसा सालाना कादियान के लिए 27,28 और 29 दिसंबर 2019 (दिनांक जुम्अ:,हफ़्ता और इतवार) की तारीख़ों की मंज़ूरी प्रदान फ़रमाई है। जमाआत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसा में शामिल होने की नीयत कर के तैयारी शुरू कर दें। अल्लाह तआला हम सबको इस लिल्लाहि जलसा से फ़ैज़याब होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। जलसा सालाना की हर लिहाज़ से कामयाबी और बाबरकत होने इसी तरह नेक फितरत लोगों की हिदायत का कारण बनने के लिए दुआएं जारी रखें। जज़ाकमुल्लाह ।

(नाज़िर इस्लाह व इर्शाद मर्कज़िया कादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (भाग-9)

मेसेडोनिया, अल्बानिया, हंगरी और क्रोशिया के वफद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ मुलाकातेंष

विभिन्न देशों से आई हुईं फैमलीज़ के साथ मुलाकातें तथा तकरीब आमीन का आयोजन।

जमाअत की तरफ़ से जलसा के दौरान मैंने जिन उच्च इन्सानी इक़दार का मज़हबी और मुआशरती प्रकट देखा इस पर बहुत सकारात्मक सोच रखता हूँ। मैंने जलसा के दौरान विश्वव्यापि भाईचारा के उसूलों का मुज़ाहरा देखा। मैं जमाअत अहमिदया के सारी इलाही मिशन में कामयाबी और तरक़्क़ी का इच्छुक हूँ और आप के लिए दुआ करता हूँ। (प्रोफेसर डाक्टर Metus Sulejmani मक़दूनिया)

इस जमाअत के अंदर वह चीज़ है जिससे यह सारे मुसलमानों को एक झंडे तले इकट्ठा कर सकती है।(प्रोफेसर डाक्टर Munir Ademi मक़दूनिया)

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

मेसेडोनिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार मेसेडोनिया से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मेसेडोनिया से इस साल 83 लोगों ने जलसा में शिरकत की। 50 लोग एक बस के माध्यम 2 हज़ार किलोमीटर का सफ़र 34 घंटों में तय कर के आए थे जब कि अन्य लोगों दूसरे माध्यमों का प्रयोग कर के शामिल हुए शामिल होने वालों में 21 अहमदी लोगों , 29 ग़ैर जमाअत दोस्त और 14 ईसाई थे। शामिल होने वालों में एक बड़े शहर के मेयर और चार विभिन्न टीवी चैनल के छ: पत्रकार और कुछ दूसरे दोस्त शामिल थे। टीवी चैनल के पत्रकारों ने जलसा के तीनों दिन जलसा के दृश्यों की रिकार्डिंग की ,इसी तरह विभिन्न मेहमानों के इंटरव्यू किए। अपने टैलीविज़न के लिए वे डॉक्यूमेनटरी तय्यार करेंगे।

*एक औरत पत्रकार ने निवेदन किया कि वह पहली बार आई है। जलसा बहुत ज़बरदस्त था। मुहब्बत , प्यार था। अमन की शिक्षा थी। मैंने जलसा में कोई कमी नहीं देखी। प्रोफ़ैशन के लिहाज़ से मैं एक पत्रकार हूँ। मैंने बतौर पत्रकार काम किया है। मर्दों के , औरतों के इंटरव्यू किए हैं। बहुत सन्तुष्ट हो कर वापस जा रही हूँ। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप तो बड़ी अच्छी पत्रकार हैं वर्ना पत्रकार तो कम ही सन्तुष्ट होते हैं।

*एक मेहमान जो कि प्रोफेसर हैं वफ़द में शामिल थे। महोदय ने निवेदन किया कि पहली बार जर्मनी के जलसा में शामिल हुआ हूँ। इतने बड़े जलसा में एक मिलीमीटर भी इन्साफ़ और अदल से दूरी नज़र नहीं आई। यह जमाअत पूरी तरह से अल्लाह तआला की राह पर चल रही है। मेरे दल ने उसकी तसदीक़ की है और गवाही दी है कि यह जमाअत सच्ची है। वह वक़्त कब आएगा जब यह जमाअत पूरी दुनिया में फैल जाएगी। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जमाअत अहमिदया एक मज़हबी जमाअत है ,मज़हबी जमाअत धीरे-धीरे तरक़्क़ी करती है। हर साल लाखों की संख्या में लोग शामिल होते हैं। इस साल 6 लाख से अधिक लोग शामिल हुए। इंशा अल्लाह एक वक़्त आएगा जब जमाअत दुनिया में फैल जाएगी और जमाअत का ग़लबा होगा। ईसाईयत को तीन सौ साल का समय लगा था जब उसे दुनिया में जाना जाने लगा था। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तीन सौ साल का अरसा नहीं गुज़रेगा जब जमाअत के मानने वाले कसरत से होंगे और दुनिया के बहुत से हिस्सा में अहमिदयों की प्रचुरता होगी। हमें मायूसी कोई नहीं। मज़हबी जमाअतों को, नस्लों को क़ुर्बानियां देनी पड़ती हैं।

*एक बच्ची ने निवेदन किया कि मेरी शादी एक पाकिस्तानी अहमदी से हुई है। मैंने पहले मैडीकल की शिक्षा हासिल की थी। अब मेरे लिए मौक़ा है कि मैं midwife का काम कर सकती हूँ या आईशा अकैडमी में काम करूँ। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि midwife का काम करें और साथ साथ दुनिया का इलम हासिल करती रहीं।

*एक मेहमान ने निवेदन किया कि मैं हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में सलाम निवेदन करता हूँ मुझे इस जलसा में शामिल हो कर बहुत ख़ुशी हुई है। मैंने इस कान्फ्रैंस में शामिल होने से पहले अहमदी मुसलमानों के ख़िलाफ़ पढ़ा था। यहां आकर मुझे उस की तसदीक़ करने का मौक़ा मिला। सब बातें ग़लत थीं। जमाअत अहमिदया ही है जो सही इस्लामी शिक्षाओं पर अनुकरण कर रही है। मैंने यहां इस्लाम का एक पाक चेहरा देखा है। तीन सौ साल नहीं बल्कि इस से बहुत पहले जमाअत अहमिदया दुनिया में ग़लबा हासिल करेगी और इस्लाम को लीड करेगी।

*एक मेहमान ने सवाल किया जो मुसलमान और ईसाई हमारी जमाअत के साथ अच्छा सुलूक नहीं करते तो मरने के बाद उनसे क्या सुलूक होगा? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यह ख़ुदा तआला का मामला है कि वह उनसे क्या सुलूक करता है।

*जलसा में तीन मुसलमान प्रोफेसर भी शामिल हुए जो आपस में दोस्त हैं। उनमें से एक प्रोफेसर जो आई. टी के प्रोफेसर हैं जिनका नाम Djeladini Etem है ने अपने प्रतिक्रियाएं वर्णन करते हुए लिखा: मैं जलसा सालाना की इंतिज़ामीया और मक़दूनिया में स्थानीय अहमदी लोगों का धन्यवादी हूँ जिनकी दावत पर मैं जलसा में शामिल हुआ। इस जगह पर सही इस्लामी शिक्षाओं का ज़हूर हो रहा था। यद्यपि इस से पहले मैंने जमाअत अहमिदया और उनके खलिफ़ा के बारे में पढ़ और सुन रखा था और बहुत सी बातें जमाअत के ख़िलाफ़ सुनी थीं,लेकिन यहां आकर इन सब का जवाब मिल गया। मैंने जमाअत के ख़लीफ़ा को देखा। इन की बातें सुनीं और उनसे बहुत ज़्यादा इल्म हासिल किया जो बातें जमाअत के ख़लीफ़ा ने वर्णन कीं उनसे बहुत ज़्यादा प्रभावित हुआ। इसी तरह कहते हैं कि जमाअत के ख़लीफ़ा की बातें सुनकर मेरा पुख़्ता ईमान है कि सारी दुनिया के लोग इस पैग़ाम और रास्ता को धारण कर लेंगे जो अल्लाह तआला की तरफ़ से शुरू हुआ है। मेरी तरफ़ से आपको सलाम और अमन मिले। मैं आप के लिए ख़ैर और नेक तमन्ना करता हूँ।

*प्रोफेसर डाक्टर Metus Sulejmani मक़दूनिया में स्शयोलोजी के प्रोफेसर हैं। उन्होंने अपने विचारों का प्रकट करते हुए कहा कि:मैं जमाअत अहमिदया के लोगों का जलसा की दावत और उच्च महमान नवाज़ी पर शुक्रगुज़ार हूँ। जमाअत की तरफ़ से जलसा के दौरान मैंने जिन उच्च इन्सानी इक़दार का मज़हबी और मुआशरती प्रकट देखा इस पर बहुत सकारात्मक सोच रखता हूँ। मैंने जलसा के दौरान विश्वव्यापि भाईचारा के उसूलों का मुज़ाहरा देखा। मैं जमाअत अहमिदया के सारी इलाही मिशन में कामयाबी और तरक़्क़ी का इच्छुक हूँ और आप के लिए दुआ करता हूँ। बहुत सम्मान के साथ इजाज़त।

*प्रोफेसर डाक्टर Munir Ademi मक़दूनिया में प्रोफ़ैसर हैं। वे अपने प्रतिक्रियाओं को इस तरह प्रकट करते हैं कि: ख़ाकसार अपने और अपनी फ़ैमिली की तरफ़ से बेहतरीन मेहमान-नवाज़ी पर जमाअत अहमिदया का शुक्रगुज़ार है। यह जमाअत अपनी धार्मिक, रुहानी, क़ौमी और मुआशरती इक़दार को बहुत उच्च स्तर पर प्रस्तुत करती है। मैं जलसा सालाना 2018 ई के मौक़ा पर ख़ुसूसी तौर पर हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। उनके ठोस और तर्कपूर्ण ख़िताबों के लिए जिस में उन्होंने मुहब्बत,अमन और भाईचारा की ज़रूरत पर ज़ोर दिया। उन्होंने मुलाक़ात के दौरान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से सवाल किया कि आपके ख़्याल में वह वक़्त कब आएगा जब यह जमाअत सारी दुनिया में मुसलमानों को lead करेगी? क्योंकि मुझे नज़र आ रहा है कि इस जमाअत के अंदर वह चीज़ है जिससे यह सारे मुसलमानों को एक झंडे तले इकट्ठा कर सकती है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :जमाअत अहमिदया अल्लाह तआला के फ़ज़ल से एक मज़हबी जमाअत है और मज़हबी जमाअतें धीरे-धीरे बढ़ा करती हैं, तरक़्क़ी किया करती हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमिदया तरक़्क़ी कर रही है। हर

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला हज़ारों हज़ार रहमतें नाज़िल फ़रमाए उन लोगों पर जो अल्लाह तआला और इस के हबीब की मुहब्बत में डूब कर उनकी रज़ा को हासिल करने वाले बने।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को हम आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में ग़ैर तशरीई नबी मानते हैं और इस से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम ख़त्मे नबुव्वत पर कोई आंच नहीं आती बल्कि आपका मुक़ाम बढ़ता है कि अब नबुव्वत भी सिर्फ आप की ग़ुलामी में ही मिल सकती है।

हे अल्लाह! तो मेरी नज़र को ले जा यहां तक कि मैं अपने महबूब मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद किसी को ना देख पाओं।

इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात मूर्ति बदरी अस्हाबे रसूल हज़रत ख़िराश बिन सिम्मन्न अन्सारी, हज़रत उबैद बिन तय्यहान, हज़रत बूहन्नह मालिक बिन अमरो, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन सअलबः, हज़रत मुआज़ बिन अमरो बिन जमूह रज़ी अल्लाह अन्हुम व रज़ू अन्हो की सीरत मुबारका का वर्णन

अहमदियत के जरनेल और अहमदियत के लिए इशक़ और ग़ैरत की नंगी तलवार ख़िलाफ़त के आशिक़ और वफ़ादार, इंतिहाई दिलेर और बहादुर, लोगों के ले लिए लाभ पहुंचाने वाले वजूद आदरणीय मुल्क सुलतान हारून ख़ान साहिब आफ़ कोट सुलतान,अटक पाकिस्तान की वफ़ात पर आप का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 5 अप्रैल 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन बदरी सहाबा का मैं ज़िक्र करूँगा उनमें पहला नाम है हज़रत ख़िरअश बिन सिम्म अनसारी रज़ि का। हज़रत ख़िराश रज़ि का सम्बन्ध ख़ज़रज की शाख़ बनू जुशम से था। आप की माता का नाम उम्मे हबीब था। हज़रत ख़िराश रज़ि की औलाद में सलमा और अबदुर्ररहमान और आईशा शामिल हैं। हज़रत ख़िराश रज़ि ने जंग बदर और उहद में शिरकत की। उहद के दिन आप को दस ज़ख़्म आए। आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माहिर तीर अंदाज़ों में से थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 425 ख़िराश बिन अलसुम्मा, दारुलकुतब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

जंग बदर में हज़रत ख़िराश रज़ि ने अबुल्आस को जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दामाद थे क़ैदी बनाया था, क़ैद किया था ।

(सीरत इब्ने हिश्शाम पृष्ठ 312 असराबी अलआस इब्ने अर्रबीअ ज़ौज ज़ैनब बिन्त रसूल दार इब्ने हज़म बेरूत 2009 ई)

दूसरा ज़िक्र जिन सहाबी का है उनका नाम हज़रत उबैद बिन तय्येहान रज़ि है। हज़रत उबैद बिन तय्येहान का नाम अतीक बिन तय्येहान भी बयान किया जाता है। उनकी माता का नाम लैला बिन्त अतीक था। आप हज़रत अबुल हसीम बिन तय्यहि उनके भाई थे और आप बनू अब्दुल अश्हल के हलीफ़ों में से थे। हज़रत उबैद रज़ि सत्तर अंसार के साथ बैअत अक़बा में शामिल हुए। रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप के और हज़रत मसऊद बिन रबीअ के बीच भाईचारा क़ायम फ़रमाया। आप अपने भाई हज़रत अबुल हसीम के साथ जंग बदर में शामिल हुए और आप ने जंग उहद में शहादत पाई। आप को इक्रिमह बिन अबु जहल ने शहीद किया। यह भी कहा जाता है कि आप जंग सिफ़्फ़ीन में हज़रत अली रज़ि की तरफ़ से लड़ते हुए शहीद हुए। उस पर थोड़ा मतभेद है लेकिन बहरहाल दोनों रिवायतों में एक समान बात है कि आप शहीद हुए। आप की औलाद में दो बेटों हज़रत उबैदुल्लाह रज़ि और हज़रत अब्बाद रज़ि का ज़िक्र मिलता है। तिबरी के कथन के अनुसार हज़रत अब्बाद रज़ि ने भी जंग बदर में शिरकत की सआदत पाई जबकि हज़रत उबैदुल्लाह के बारे में बयान किया जाता है कि व जंग यमामा में शहीद हुए।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 342-343 अब्बुल हीसम बिन अत्तहयान , उबैद बिन अत्तहयान। दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)(असदुल ग़ाबः जिल्द 3 पृष्ठ 153 अबाद बिन उबैद, पृष्ठ 521 अबैदुल्लाह बिन उबैद बिन अत्तहयान, पृष्ठ 529 उबैद बिन अत्तहयान दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत अबू हन्नह मालिक बिन अमरो रज़ि। अबू हन्नह उनकी कुनिय्यत थी। मालिक बिन अमरो उनका नाम था। मुहम्मद बिन उम्र वाक़दी ने आप को बदर में शामिल लोगों में लिखा है। आप के नाम के बारे में मतभेद है। कुछ रवायतों के अनुसार आप का नाम आमिर और साबित बिन नुअमान भी बयान हुआ है। आप की कुनिय्यत अबू हब्बह और अब्बू हय्यह भी बयान की जाती है लेकिन मुहम्मद बिन उम्र वाक़दी कहते हैं कि अबू हब्बह कुन्नियत के दो अदमियों का ज़िक्र मिलता है। एक अबू हब्बह बिन गज़ीयय्ह बिन अमरो और दूसरे अबू हब्बह बिन अबदे अमरो अलमाज़िनी। ये दोनों जंग बदर में शरीक नहीं हुए थे। बदर के शामिल होने वालों में से किसी की कुनिय्यत अबू हब्बह ना थी बल्कि जंग बदर में जो शामिल हुए हैं उनकी कुनिय्यत अबू हन्नह थी। इस लिहाज़ से वे अपनी बात पर-ज़ोर देते हैं कि अबू हन्नह ही उनकी कुनिय्यत थी।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 365 अब्बू हन्ना दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

(असदुल ग़ाबः जिल्द 6 पृष्ठ 63 अब्बू हब्बा अलअन्सारी दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन सअलबह रज़ि। आप को अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी कहा जाता है। आप की कुनिय्यत अब्बू मुहम्मद थी। पिता का नाम हज़रत ज़ैद बिन सअलबह रज़ि था और यह भी सहाबी थे। उनका सम्बन्ध क़बीला अंसार के क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू जुशम से था। आप बैअत उक़बा में सत्तर अंसार के साथ शामिल हुए और जंग बदर और उहद और ख़ंदक़ और अन्य जंगों में आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शिरकत की। फ़तह मक्का के वक़्त बनू हारिस बिन ख़ज़रज का झंडा आप के पास था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि इस्लाम लाने से पहले अरबी लिखना जानते थे जबकि उस ज़माने में अरब में लिखना बहुत कम थी। बहुत कम लोग होते

थे जो लिखना जानते हूँ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि की औलाद मदीना में रही। आप के एक बेटे का नाम मुहम्मद था जो आप की बीवी सअ़दऩ बिन्त कुलैब से पैदा हुए और एक बेटी उम्मे हुमीद थीं जिनकी माता अहल यमन से थीं ।

आप के भाई हुरैस बिन ज़ैद थे जो बदरी सहाबी थे। (असदुल ग़ाब: जिल्द 3 पृष्ठ 248 अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अल्अन्सारी दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 405-406 अब्दुल्लाह बिन ज़ैद, हरीस बिन ज़ैद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990ई) और आप की एक बहन का नाम क़ुरैबह बिन्त ज़ैद रज़ि था, वह भी सहाबिया थीं ।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 8 पृष्ठ 271-272 क़ुरैबह बिन्त ज़ैद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि वह सहाबी हैं जिन को ख़्वाब में अज़ान के शब्द बताए गए और आप ने आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस के बारे में सूचित किया जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ि को हुक्म दिया कि वह इन शब्दों में अज़ान दें जो हज़रत अब्दुल्लाह ने ख़्वाब में देखे थे। यह घटना हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मस्जिद नबवी की तामीर के बाद सन एक हिज्री की है।

(अल्इस्तियाब फी मअरफतिल असहाब जिल्द 3 पृष्ठ 913 अब्दुल्लाह बिन ज़ैद दार अलजैल बेरूत 1992 ई)

इस का कुछ विस्तार इस तरह है कि हज़रत अबू उमैर बिन अन्स अन्सारी रज़ि (अन्सार में से थे) अपने चचों से रिवायत करते हैं कि उन्होंने कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सोचा कि नमाज़ के लिए लोगों को कैसे जमा किया जाये? आप को अर्ज़ किया गया कि नमाज़ के वक़्त एक झंडा लगा कर दिया जाए। जब लोग उसे देखेंगे तो एक दूसरे को सुचित कर देंगे मगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह परामर्श पसन्द नहीं आया। रावी कहते हैं कि आप से शंख का ज़िक्र किया गया अर्थात यहूद के बुलाने के तरीक़ से जो बुलंद आवाज़ से blow किया जाता है। आप ने इस को भी पसंद नहीं फ़रमाया कि यह यहूद का तरीक़ा है। रावी कहते हैं फिर आप से नाक़ूस का ज़िक्र किया गया। आप ने फ़रमाया कि वो इसाईयों का तरीक़ा है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद वापस गए और रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फ़िक्र की वजह से फ़िक्रमन्द थे। दुआ की तो कहते हैं उनको ख़्वाब में अज़ान दिखाई गई। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि ही बयान करते हैं कि मैंने ख़्वाब में एक आदमी को देखा जिसके हाथ में नाक़ूस था। मैंने इस से पूछा हे ख़ुदा के बन्दे ! तो इस नाक़ूस को बेचेगा। उसने कहा तू इस से किया करेगा? मैंने कहा कि हम इस के द्वारा नमाज़ के लिए बुलाएँगे। उसने कहा तो क्या मैं तुम्हें वह बात बता दूं जो इस से बेहतर है? मैंने कहा क्यों नहीं? हज़रत अब्दुल्लाह कहते हैं कि उसने कहा फिर कहो और अज़ान के शब्द दुहराए कि

اَللّٰہُ أَکْبَرُ اللّٰہُ أَکْبَرُ۔ اَللّٰہُ أَکْبَرُ اللّٰہُ أَکْبَرُ۔ أَشْھَدُ أَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ۔ أَشْھَدُ أَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ۔ أَشْھَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ۔ أَشْھَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ۔ حَیَّ عَلَی الصَّلَاۃِ۔ حَیَّ عَلَی الصَّلَاۃِ۔ حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ۔ حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ۔ اَللّٰہُ أَکْبَرُ اللّٰہُ أَکْبَرُ۔ لَآ إِلٰہَ إِلَّا اللّٰہُ۔

इस का अनुवाद भी बच्चों के लिए और नए मुसलमानों के लिए पढ़ देता हूँ, लाभ दायक होता है। अज़ान हम रोज़ सुनते हैं लेकिन फिर भी कइयों को मैंने देखा है अनुवाद नहीं आता। अल्लाह सबसे बड़ा है अल्लाह सबसे बड़ा है। यह चार बार कहना है। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। यह दो बार कहना है। फिर मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। यह भी दो बार है। फिर नमाज़ की तरफ़ आओ, हय्या अलस्सला नमाज़ की तरफ़ आओ। हय्या अलुफ़लाह। कामयाबी की तरफ़ आओ, कामयाबी की तरफ़ आओ। अल्लाह सबसे बड़ा है। ये फिर दो बार कहना है। ला इलाहा इल्लल्लाहो अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं।

फिर कहते हैं कि यह शब्द दोहराने के बाद वह आदमी मुझ से थोड़ा सा पीछे हटा और फिर कहा कि जब तुम नमाज़ खड़ी करो तो यह कहा करो। फिर तकबीर के श्ब्द दोहराए कि

اَللّٰہُ أَکْبَرُ اللّٰہُ أَکْبَرُ۔ أَشْھَدُ أَنْ لَّا إِلٰہَ إِلَّا اللّٰہُ أَشْھَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ۔ حَیَّ عَلَی الصَّلَاۃِ۔ حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ۔ قَدْ قَامَتِ الصَّلَاۃُ۔ قَدْ قَامَتِ الصَّلَاۃُ۔ اَللّٰہُ أَکْبَرُ اللّٰہُ أَکْبَرُ۔ لَآ إِلٰہَ إِلَّا اللّٰہُ۔

इस में दो ही शब्द अज़ान से अधिक हैं। क़द क़ामतिस्सलात है कि नमाज़ खड़ी हो गई है। नमाज़ खड़ी हो गई है और फिर वही अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है।

फिर कहते हैं जब सुबह हुई तो मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और जो मैंने देखा था बयान कर दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि निसन्देह अल्लाह चाहे तो यह सच्ची ख़्वाब है। तुम बिलाल के साथ खड़े हो जाओ और जो तुमने देखा था वह बताते जाओ। वह इन शब्दों के साथ अज़ान दे दे चूँकि उस की आवाज़ तुमसे ज़्यादा बुलंद है। अत: मैं बिलाल के साथ खड़ा हो गया मैं उनको बताता जाता था और वह उस के अनुसार अज़ान देते जाते थे। रावी का यह बयान है कि जब हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ी अल्लाह अन्हो ने ये अज़ान सुनी तो वह अपने घर में थे। वह अपनी चादर घसीटते हुए निकले और कह रहे थे कि उस की क़सम जिस ने आप को हक़ के साथ या रसूल अल्लाह भेजा है! मैंने वही देखा जो उसने देखा है। यह सुनकर आप ने फ़रमाया कि सब तारीफ़ अल्लाह तआला के लिए है।

(सुनन अबी दाऊद किताबुस्लात बाब बदउस्सलात हदीस 498)

एक दूसरी रिवायत में इस जगह यह अलफ़ाज़ मिलते हैं कि इस पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह ही के लिए सब तारीफ़ है अत: यही बात पुख़्ता है।

(जामा अत्तर्मज़ी किताबुस्सलात हदीस 189)

इस के विस्तार में सीरत ख़ातमुल अंबिया में, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने मुख़्तलिफ़ तारीख़ों से ले के कुछ बातें अधिक बयान फ़रमाई हैं। वे बयान करते हैं कि

"अभी तक नमाज़ के लिए ऐलान या अज़ान इत्यादि का प्रबन्ध नहीं था तो सहाबा प्राय वक़्त का अंदाज़ा करके ख़ुद नमाज़ के लिए जमा हो जाते थे लेकिन यह सूरत कोई सन्तोष जनक नहीं थी। मस्जिद नबवी के तैयार हो जाने पर यह सवाल ज़्यादा महसूस तौर पर पैदा हुआ कि किस तरह मुस्लमानों को वक़्त पर जमा किया जाए। किसी सहाबी ने इसाइयों की तरह नाक़ूस की राय दी। किसी ने यहूद की मिसाल में बूक़ की तजवीज़ पेश की। किसी ने कुछ कहा। मगर हज़रत उमर रज़ि ने मश्वरा दिया कि किसी आदमी को मुक़र्रर कर दिया जाए कि वह नमाज़ के वक़्त यह ऐलान कर दिया करे कि नमाज़ का वक़्त हो गया है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस राय को पसंद फ़रमाया (अज़ान से पहले हज़रत उमर रज़ि की एक यह राय थी) हज़रत बिलाल रज़ि को हुक्म दिया कि वो इस फ़र्ज़ को अदा क्या करें। अत: उस के बाद जब नमाज़ का वक़्त आता था बिलाल बुलंद आवाज़ से "अस्सलातो जामेअ" कह कर पुकारा करते थे और लोग जमा हो जाते थे। बल्कि अगर नमाज़ के इलावा भी किसी उद्देश्य के लिए मुस्लमानों को मस्जिद में जमा करना होता तो यही आवाज़ दी जाती, यही ऐलान किया जाता। उस के कुछ समय के बाद,(फिर आगे उनका वही क़िस्सा है कि) एक सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी रज़ि को खो अब मैं मौजूदा अज़ान के अलफ़ाज़ सिखाए गए और उन्होंने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अपनी इस ख़्वाब का ज़िक्र किया और अर्ज़ किया कि मैंने ख़्वाब में एक आदमी को अज़ान के तौर पर यह अलफ़ाज़ पुकारते सुना है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह ख़्वाब ख़ुदा की तरफ़ से है और अब्दुल्लाह को हुक्म दिया कि बिलाल को यह अलफ़ाज़ सिखा दें। लिखते हैं कि अजीब संयोग यह हुआ कि जब बिलाल रज़ि ने इन अलफ़ाज़ में पहली दफ़ा अज़ान दी तो हज़रत उमर रज़ि उसे सुनकर जल्दी जल्दी आप की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हे अल्लाह के रसूल! आज जिन अलफ़ाज़ में बिलाल रज़ि ने अज़ान दी है ठीक वही अलफ़ाज़ मैंने भी ख़्वाब में देखे हैं। और एक रिवायत में यह है कि जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अज़ान के अल्फ़ाज़ सुने तो फ़रमाया कि इसी के अनुसार वह्यी भी हो चुकी है।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुल अंबिया लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 271-272)

बशीर बिन मुहम्मद अपने पिता से बयान करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि जिन्हें अज़ान रोया में दिखाई गई थी उन्होंने अपना वह माल सदक़ा किया जिसके इलावा आप के पास कुछ और नहीं था। सारा माल सदक़ा कर दिया। आप और आप का बेटा उस के द्वारा ज़िन्दगी बसर कर रहे थे। वही इनका गुज़ारे का माध्यम था। अत: जो भी जायदाद थी आप ने उसे रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सपुर्द कर दिया। जब उन्होंने ये माल सपुर्द कर दिया तो इस पर उनके पिता रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल! अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि ने अपना माल सदक़ा किया है और वह उस के द्वारा ज़िन्दगी बसर कर रहे थे। इस पर रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि को बुला कर फ़रमाया कि यक़ीनन अल्लाह ने तुझ से तेरा सदक़ा क़बूल कर लिया जो तूने दिया। जो अल्लाह के लिए छोड़ दिया वह अल्लाह ने क़बूल कर लिया। हां उस को विरासत के तौर पर अपने माता पिता को लौटा दे। अब यह विरासत के तौर पर माता पिता को वापस कर दे। तो बशीर कहते हैं कि फिर हमने उस को विरासत में पाया अर्थात आगे फिर उनके बच्चों ने इस तरह इस में से हिस्सा लिया।

(मारफतुस्सहाबा ले अबी नईम असबहानी जिल्द 3 पृष्ठ 149 पृष्ठ 149 अब्दुल्लाह बिन ज़ैद.... हदीस 4172 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

एक मौक़ा पर रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि को अपने नाख़ुन तबर्रुक के रूप में अता फ़रमाए। इस की तफ़सील यह है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि के बेटे मुहम्मद ने बयान किया कि उनके पिता नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हज्जतुल विदा के मौक़ा पर मिना के मैदान में मनहर अर्थात क़ुर्बान गाह में क़ुर्बानी के वक़्त हाज़िर थे और आप के साथ अन्सार में से एक और आदमी भी था। रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुर्बानियां तक़सीम कीं तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि और उनके अन्सारी साथी को कुछ ना मिला। फिर रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक कपड़े में अपने बाल उतरवाए और उन्हें लोगों में तक़सीम कर दिया। फिर आप ने अपने नाख़ुन कटवाए और वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि और उनके अन्सारी साथी को प्रदान कर दिए।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 406 अब्दुल्लाह बिन ज़ैद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत आयशा रज़ि से रिवायत है कि एक आदमी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! ख़ुदा की क़सम ! यक़ीनन आप मुझे मेरी ज़ात से ज़्यादा महबूब हैं और यक़ीनन आप मुझे मेरे अहल से ज़्यादा महबूब हैं और यक़ीनन आप मुझे मेरी औलाद से ज़्यादा महबूब हैं। मैं घर में था और आप को याद कर रहा था कि मुझ से सब्र ना हुआ यहां तक कि मैं आप की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अब मैं आप को देख रहा हूँ । जब मुझे अपनी और आप की मौत याद आई तो मैंने जान लिया कि जब आप जन्नत में दाख़िल होंगे तो अन्य नबियों के साथ आप का रफ़ा होगा और मैं डरा कि जब मैं जन्नत में दाख़िल हूँगा तो आप को वहां ना पाऊँगा। इस पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस आदमी को कोई जवाब ना दिया यहां तक कि जिब्रील इस आयत के साथ नाज़िल हुए

وَ مَنۡ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ الرَّسُوۡلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمَ اللّٰهُ عَلَيۡهِمۡ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَ الصِّدِّيۡقِيۡنَ وَ الشُّهَدَآءِ وَ الصّٰلِحِيۡنَ ۚ وَ حَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيۡقًا

(अन्निसा:70)

कि और जो भी अल्लाह की और इस के रसूल की इताअत करे तो यही वे लोग हैं जो उन लोगों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने इनाम किया है अर्थात नबियों में से, सिद्दीक़ों में से, शहीदों में से और सालहीन में से।

(तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द 2 पृष्ठ 311 अन्निसा:69 दारुल कुतुब अल्इलमी बेरूत 1998 ई)

इस आयत को हम इस दलील के तौर पर भी पेश करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी से ग़ैर तशरीई नबुव्वत का मुक़ाम हासिल हो सकता है और आप की पैरवी में एक आदमी सालहीत के मुक़ाम से तरक़्क़ी कर के नबुव्वत के मुक़ाम तक पहुंच सकता है। बहरहाल नबुव्वत का मुक़ाम चाहे वह ग़ैर तशरीई नबुव्वत ही हो और वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में भी है तो एक बहुत उच्च मुक़ाम है और अल्लाह तआला जिसे चाहे देता है और आने वाले मसीह मौऊद के बारे में ख़ुद आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नबी उल्लाह के शब्द प्रयोग किए हैं ।

(सही मुस्लिम किताबुल फित्न हदीस (2937)

इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को हम आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में ग़ैर तशरीई नबी मानते हैं और इस से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम ख़त्मे नबुव्वत पर कोई हर्फ़ नहीं आता बल्कि आप का मुक़ाम बढ़ता है कि अब नबुव्वत भी सिर्फ आप की ग़ुलामी में ही मिल सकती है और यह अर्थ सिर्फ हम ही नहीं करते बल्कि पुराने बुज़ुर्गों ने भी किए हैं। अत: इमाम राग़िब ने भी इस के यही अर्थ किए हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद ग़ैर शरई नबी आप की पैरवी में आ सकते हैं ।

(तफ़सीर अलबेहरुल मुहीत भाग 3 पृष्ठ 299 अन्निसा :69 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2010 ई)

बहरहाल इस आयत के अन्तर्गत मैंने यह ज़िक्र कर दिया ताकि वज़ाहत भी हो जाए।

अल्लामा जरक़ानी लिखते हैं कि विभिन्न तफ़सीर की किताबों में यह घटना आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम हज़रत सोबान रज़ि के बारे में मिलती है जबकि तफ़सीर यनबूउल हया में मुक़ातिल बिन सुलेमान के हवाले से लिखा है कि यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी रज़ि थे जिन्होंने रोया में अज़ान देखी थी। अल्लामा जरक़ानी लिखते हैं कि अगर यह बात दरुस्त है तो मुम्किन है कि दोनों ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ऐसी बात का ज़िक्र क्या हो और इस पर यह आयत नाज़िल हुई हो और यह भी ज़िक्र मिलता है कि ऐसी बात नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कई सहाबा ने की थी।

(शरह जरक़ानी अलल मवाहिब अल्दुनिया भाग 12 पृष्ठ 417-418 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1996 ई)

पहले वर्णन की घटना के इलावा तफ़सीरों में हज़रत सौबान की घटना और शब्गों में भी बयान हुई है जिसकी तफ़सील यह है कि हज़रत सौबान रज़ि को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बहुत अधिक मुहब्बत थी और आप से दूरी में ज़्यादा सब्र नहीं कर सकते थे। एक रोज़ जब वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उनका रंग बदला हुआ था और उनके चेहरे से दु:ख के चिन्ह ज़ाहिर हो रहे थे। इस पर रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि किस चीज़ के कारण तुम्हारा रंग बदला हुआ है? हज़रत सौबान रज़ि ने अर्ज़ की कि हे रसूलुल्लाह! ना तो मुझे कोई मर्ज़ है और ना ही कोई बीमारी है सिवाए इस के कि मैं आप को देख ना सका। अर्थात कुछ अर्से से देखा नहीं था। इसलिए मुझ पर बहुत अधिक वहशत छा गई जब तक कि आप से मुलाक़ात ना हो गई। इसी तरह जब मुझे आख़िरत की याद आई तो मुझ पर फिर ख़ौफ़ तारी हुआ कि मैं आप को ना देख सकूँगा क्योंकि आप का तो नबियों के साथ रफ़ा किया जाएगा और अगर मैं जन्नत में चला भी गया तो मेरा मुक़ाम वहां आप के मुक़ाम से बहुत ही कमतर होगा और अगर मैं जन्नत में ना दाख़िल हो सका तो फिर में कभी भी आप को ना देख सकूँगा।

(तफ़सीर अलबग़वी भाग 1 पृष्ठ 450 अन्निसा: 69 इदारा तालीफ़ात अशर्फ़ीया मुल्तान पाकिस्तान 1425 हिजरी)

अल्लामा जरक़ानी लिखते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि अपने बाग़ में काम कर रहे थे। अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि का फिर दुबारा ज़िक्र शुरू होता है। फिर यह है कि आप का बेटा आप के पास आया और आप को ख़बर दी कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वफ़ात पा गए हैं। इस पर आप ने कहा कि

اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ بَصَرِیْ حَتّٰی لَا اَرٰی بَعْدَ حَبِیْبِیْ مُحَمَّدًا اَحَدًا۔

कि हे अल्लाह! तो मेरी नज़र को ले जा यहां तक कि मैं अपने महबूब मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद किसी को ना देख पाऊं। उस के बाद, शरह जरक़ानी में यह लिखा है कि कहते हैं कि इस के बाद आप की नज़र जाती रही और आप अन्धे हो गए।

(शरह जरक़ानी अलल मवाहिब लदुनिया जज़ई 9 पृष्ठ 84-85 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1996 ई)

उनकी वफ़ात के बारे में लिखा है कि अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि की वफ़ात के बारे में मतभेद पाया जाता है। कुछ ने जंग उहद के बाद वफ़ात का ज़िक्र किया है लेकिन अक्सर यह बयान हुआ है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि सारी जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए थे और आप की वफ़ात हज़रत उसमान रज़ि की ख़िलाफ़त के आख़री दौर में 32 हिज्री में मदीना में हुई थी और वह जो नज़र वाली घटना है इस से भी अगर उस को सही माना जाए तो यही लगता है कि हज़रत उसमान रज़ि के दौर में हुई थी जबकि उस वक़्त उनकी उम्र 64 साल थी। आप की नमाज़ जनाज़ा हज़रत उसमान रज़ि ने पढ़ाई।

(अलमुस्तदरक अलस्सहीहैन लिल हाकिम जिल्द 5 पृष्ठ 266, किताबुल फ़राइज़ ,हदीस 8187, दारुल फ़िक्र 2001 ई)

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 406 अब्दुल्लाह बिन ज़ैद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत मुआज़ बिन अमर बिन जमूह रज़ि। हज़रत मुआज़ बिन अमरो रज़ि का सम्बन्ध बनू ख़ज़रज की शाख़ बनू सलमा

से था। आप बैअत उक़बा सानिया और जंग बदर और उहद में शामिल हुए थे। आप के पिता हज़रत अमरो बिन जमूह रज़ि सहाबी रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे जो जंग उहद में शहीद हुए थे। आप की माता का नाम हिन्द बिन्त अमरो था। मूसा बिन उक़बह, अबू मअशर और मुहम्मद बिन उम्र वाक़दी के नज़दीक आप के भाई मुअव्विज़ बिन अमरो रज़ि भी जंग बदर में शामिल हुए थे और आप की बीवी का नाम सुबैयतह बिन्त अमरो था जो बनू ख़ज़रज की शाख़ बनू साइदह से थीं। उनसे आप का एक बेटा अब्दुल्लाह और एक बेटी उमामह पैदा हुईं ।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 426-427 मआज़ बिन अमरो दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

(अस्सीरतुन नबविय्या ले इब्ने कसीर पृष्ठ 197 फ़सल फ़ी रुजू अन्सार लैयलतुल अक्ब: अस्सानिया इलल मदीनह दारु कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2005 ई)

हज़रत मुआज़ रज़ि बैअत अक़बा सानिया में शामिल हुए थे लेकिन उनके पिता अमरो बिन जमूह अपने मुशरिकाना अक़ाइद पर बहुत सख़्ती से क़ायम थे। सीरत इब्ने हिशाम में हज़रत मुआज़ रज़ि के पिता के इस्लाम क़बूल करने की घटना लिखी है। कोई साल हुआ है मैंने उनकी घटना में भी थोड़ा सा बयान किया था कि जब ये लोग, बैअत उक़बा सानिया में शामिल होने वाले जो लोग थे मदीना वापस आए तो उन्होंने इस्लाम की ख़ूब इशाअत की और उनकी क़ौम में कुछ बुज़ुर्ग अभी तक अपने शिर्क वाले धर्म पर क़ायम थे उनमें से एक अमरो बिन जमूह रज़ि भी थे। आप के बेटे मुआज़ बिन अमरो बैअत अक़बा सानिया में शामिल हुए थे और इस मौक़ा पर उन्होंने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत कर ली थी। अमरो बिन जमूह बनू सलमा के सरदारों में से थे और उनके बुज़ुर्गों में से एक बुज़ुर्ग थे। उन्होंने अपने घर में लक्कड़ी का एक बुत बना कर रखा हुआ था जैसा कि इस वक़्त के बड़े लोग बना कर रखते थे। उसे "मनात" कहा जाता था। इस को माबूद बना कर उस की साफ सुथरा करते थे। जब बनू सलमा के कुछ नौजवान इस्लाम ले आए जिन में हज़रत मुअज़ बिन जबल रज़ि और अमरो बिन जमूह के बेटे हज़रत मुआज़ बिन अमरो बिन जमूह रज़ि थे। ये उन नौजवानों में से थे जो इस्लाम लाए और उक़बा सानिया में शामिल हुए तो ये लोग रात को अमरो बिन जमूह के बुत के घर में दाख़िल हो कर उस बुत को उठा कर ले आते और उसे बनू सलमा के कूड़े में फेंकने के लिए बनाए जाने वाले गढ़े में औंधा लिटा देते, फेंक देते। जब सुबह अमरो उठते तो कहते तुम्हारा बुरा हो। किस ने रात को हमारे माबूदों से दुश्मनी की। फिर उस को ढूढ़ने निकल पड़ते यहां तक कि जब उसे पा लेते तो उसे धोते और साफ़ करते। फिर कहते कि ख़ुदा की क़सम ! अगर मैं यह जान लूं कि किस ने तेरे साथ ऐसा किया तो ज़रूर में उसे अपमानित करूँगा। फिर जब रात होती और अमरो सो जाते तो दुबारा उनके बेटे वही हरकत करते। फिर अमरो बिन जमूह ने सुबह की और दुबारा वही तकलीफ़ उठा कर फिर उसे धोया। फिर साफ़ किया। जब कई रात यह घटना हुई तो अमरो बिन जमूह ने बुत को वहां से बाहर निकाला जहां उसे फेंका गया था फिर उसे धोया और साफ़ किया। फिर वह अपनी तलवार लाए और इस के गले में लटका दी और कहा कि अल्लाह की क़सम! यक़ीनन मुझे यह तो नहीं मालूम कि तेरे साथ ऐसा कौन करता है अत: अगर तुझ में कोई ताक़त है तो इस को रोक ले और यह तलवार तेरे पास पड़ी है। बुत के पास तलवार रख दी। जब शाम हुई और अमरो सो गए तो उन नौजवानों ने जिन में उनका बेटा शामिल था इस बुत से दुबारा वही सुलूक किया। इस के गले से वह तलवार ली और एक मुर्दा कुत्ते को लेकर उस बुत को रस्सी के साथ इस से बांध दिया और बनू सलमा के एक पुराने कुँएं में फेंक दिया जिसमें कूड़ा इत्यादि फेंका जाता था। सुबह जब अमरो बिन जमूह उठे तो उन्होंने इस बुत को इस जगह पर ना पाया जहां उसे रखा जाता था। अत: वह उसे ढूंढते रहे यहां तक कि उस कुँएं में औंधे मुँह मुर्दा कुत्ते के साथ बंधा हुआ पाया। जब उन्होंने यह नज़ारा देखा तो उन पर हक़ीक़त खुल गई और उनकी क़ौम के मुसलमान लोगों ने भी उन्हें इस्लाम की तालीम दी तो आप ख़ुदा की रहमत से इस्लाम ले आए।

(अस्सीरतुन नबविय्या ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 207-208 किस्सत अमरो बिन अलजमूह, दार इब्ने हज़म बेरूत 2009 ई)

इब्ने हश्शाम की सीरत में यह घटना इस तरह लिखी है कि बुत तो तलवार के साथ भी कुछ नहीं कर सका तो ऐसे ख़ुदा को पूजने का क्या फ़ायदा!

हज़रत मुआज़ बिन अमरो बिन जमूओह रज़ि अब्बू जहल को क़त्ल करने वालों में भी शामिल थे। अत: बुख़ारी की रिवायत में दर्ज है कि सालिह बिन इब्राहीम अपने दादा हज़रत अब्दुर्र रहमान बिन ओफ़ रज़ि से रिवायत करते हैं कि उन्होंने बताया कि मैं बदर की लड़ाई में सफ़ में खड़ा था कि मैंने अपने दाएं बाएं नज़र डाली तो क्या देखता हूँ कि दो अन्सारी लड़के हैं। उनकी उमरें छोटी हैं। मैंने आरज़ू की कि काश में ऐसे लोगों के बीच होता जो उन से ज़्यादा जवान,तंदरुस्त होते। इतने में उनमें से एक ने मुझे हाथ से दबा कर पूछा कि चाचा क्या आप अबुजहल को पहचानते हैं? मैंने कहा हाँ भतीजे। तुम्हें इस से क्या काम है? उसने कहा मुझे बतलाया गया है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां देता है और उस ज़ात की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है अगर मैं उस को देख पाओं तो मेरी आँख उस की आँख से जुदा ना होगी जब तक हम दोनों में से वह ना मर जाए जिसकी मुद्दत पहले मुक़द्दर है। मैं इस पर बड़ा हैरान हुआ। फिर दूसरे ने मुझे हाथ से दबाया और उसने भी मुझे इसी तरह पूछा। अभी थोड़ा अरसा गुज़रा होगा कि मैंने अबुजहल को लोगों में चक्कर लगाते देखा। मैंने कहा देखो वह है तुम्हारा साथी जिसके बारे में तुमने मुझ से पूछा था। यह सुनते ही वे दोनों जल्दी से अपनी तलवारें लिए उस की तरफ़ लपके और इस पर हमला कर के दोनों ने उसे क़तल कर डाला। फिर वे दोनों लौट कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और आप को ख़बर दी। आप ने पूछा तुम में से किस ने उस को मारा है। दोनों ने कहा मैंने उस को मारा है। आप ने पूछा क्या तुमने अपनी तलवारें पोंछ कर साफ़ कर ली हैं? उन्होंने कहा नहीं। आप ने तलवारों को देखकर फ़रमाया कि तुम दोनों ने ही इस को मारा है। इस का सामान ग़नीमत मुअअज़ बिन अमरो बिन जमूह रज़ि को मिलेगा और इन दोनों का नाम मआज़ था। मुआज़ बिन अफ़रा रज़ि और मुआज़ बिन अमरो बिन जमोह रज़ि।

(सही अल्बुख़ारी किताब फ़र्ज़ अल्ख़मीस बाब मन लम यख़मस अलअसलाब हदीस 3141)

पहले भी शुरू में एक बार मआज़ और मुअव्वज़ की घटनाओं को बयान कर चुका हूँ और यहां फिर शंका पैदा हो सकती है। इसलिए उस के क़त्ल की जो घटना विभिन्न कुतुब हदीस में और सीरत में भी बयान हुई है और यह जो बुख़ारी से भी रिवायत बयान हुई है इस में ये ज़िक्र है कि हज़रत मुआज़ बिन अमरो बिन जमूओ रज़ि और हज़रत मुआज़ बिन अफ़रा ने अबुजहल पर हमला कर के उसे क़तल किया था और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ने अबुजहल का सिर क़लम किया था। दूसरी जगह मआज़ और मुअव्वज़ का ज़िक्र मिलता है। बहरहाल उस के इलावा बुख़ारी में ही ऐसी रिवायतें भी हैं जिन में ये ज़िक्र है कि अबुजहल को अफ़राइ के दो बेटों मआज़ और मुअव्वज़ ने क़त्ल किया था और बाद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ने जा कर उस का काम तमाम किया। अत: बुख़ारी की एक रिवायत में इस का विस्तार यूं वर्णन हुआ है:

हज़रत अनस रज़ि बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

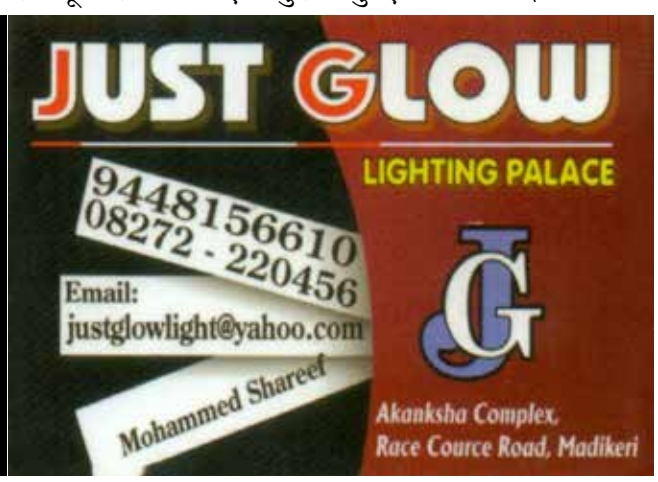

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

जंग बदर के दिन फ़रमाया कौन देखेगा कि अबुजहल का क्या हाल हुआ है? हज़रत इब्ने मसूद रज़ि गए और जा कर देखा कि इस को अफरा के दोनों बेटों मआज़ और मुअव्वज़ ने तलवारों से मारा है कि वह मरने के क़रीब हो गया है। हज़रत इब्ने मसूद रज़ि ने पूछा क्या तुम अबु जहल हो? हज़रत इब्ने मसूद रज़ि कहते हैं उन्होंने अबु जहल की दाढ़ी पकड़ी। अबु जहल कहने लगा क्या इस से भी बढ़कर कोई आदमी है जिसको तुमने मारा या यह कहा कि इस आदमी से बढ़कर कोई है जिसको उस की क़ौम ने मारा हो?

(सही अलबख़ारी किताबुल अलमग़ाज़ी बाब क़तल अबी जहल हदीस 3962)

ये दोनों रिवायतें बुख़ारी में ही मिलती हैं। दो नाम मआज़ के आते हैं और एक जगह मआज़ और मुअव्वज़ के नाम आते हैं । एक जगह दोनों के पिता के नाम विभिन्न है। एक जगह एक ही बाप के दोनों बेटे कहलाते हैं।

हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वलीउल्लाह शाह साहिब रज़ि अबुजहल के कातिलों की कि किस तरह उस की ततबीक़ की जाए किस तरह उस की वज़ाहत हो ? उस को बयान करते हुए लिखते हैं कि कुछ ोरवायतों में है कि अफ़रा के दो बेटों (मुअव्वज़ रज़ि और मआज़ रज़ि) ने अबुजहल को मौत के क़रीब पहुंचा दिया था। इस के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ने इस का सिर तन से जुदा किया था। इमाम इब्न हिज्र ने इस एहतिमाल का इज़हार किया है कि मआज़ बिन अमरो बिन अफ़रा रज़ि और मुआज़ बिन अफ़रा रज़ि के बाद मुअव्वज़ बिन अफ़रा रज़ि ने भी इस पर वार क्या होगा।

(सही बुख़ारी जिल्द 5 पृष्ठ 491 हाशिया, उर्दू अनुवाद प्रकाशक नज़ारत इशाअत रब्वह)

इसलिए पहली दो रिवायतों में इन दोनों भाईयों का भी ज़िक्र मिलता है। दूसरी रिवायत में दो विभिन्न लोगों का ज़िक्र मिलता है और जो शरह फ़तहुल बारी है इस में लिखा है कि हो सकता है कि ये तीनों ही हूँ। अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी अबुजहल के कातिलों की ततबीक़ करते हुए लिखते हैं कि अबुजहल को मुआज़ बिन अमरो बिन जमूह रज़ि और मुआज़ बिन अफ़राइ रज़ि और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ने क़तल किया था। हज़रत अब्दुल्लाह ने इस का सिर क़लम किया और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में लेकर हाज़िर हुए।

(अमदतुल क़ारी जिल्द 17 पृष्ठ 120 हदीस 3962 दार अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत 2003 ई)

अल्लामा बदर उद्दीन ऐनी लिखते हैं कि सही मुस्लिम में है कि जिन दोनों ने अबुजहल को क़तल किया था वे मुआज़ बिन अमरो बिन जमूओह रज़ि और मुआज़ बिन अफ़रा रज़ि हैं । मुआज़ बिन अफ़रा रज़ि के पिता का नाम हारिस बिन रफ़ाह था और अफ़रा उनकी माँ थीं जो उबैद बिन सअ़लबह नज्जारया की बेटी थीं। इसी तरह बुख़ारी किताबुल जिहाद में बाब मन् लम् यख़मिसिल असुलाब में ज़िक्र आ चुका है कि हज़रत मुआज़ बिन अमरो जिन्होंने अबुजहल की टांग काटी और गिरा दिया था। फिर मुउविज़ बिन अफ़रा ने इस को मारा यहां तक कि उसने उस को ज़मीन पर गिरा दिया। फिर उस को छोड़ दिया जबकि इस में अभी कुछ ज़िन्दगी बाक़ी थी, जान थी। फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि ने इस पर भरपूर हमला किया और इस का सिर काट दिया। फिर यह लिखते हैं कि अगर तू कहे कि इन सारी बातों को यूं इकट्ठा बयान करने की क्या ज़रूरत है तो मैं यह कहता हूँ कि शायद अबुजहल का क़तल इन सब का काम था इसलिए इकट्ठा किया है।

(अमदतुल क़ारी जिल्द 17 पृष्ठ 121-122 हदीस 3962 दार अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत 2003 ई)

जरक़ानी की एक रिवायत के अनुसार हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ने जब अबुजहल को देखा तो इस को इस हाल में पाया कि आख़री सांस ले रहा था। इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि ने अपनी टांग अबुजहल की गर्दन पर रखकर कहा कि ए अल्लाह के दुश्मन! अल्लाह ने तुझे अपमानित कर दिया है। इस पर अबुजहल ने अंहकार पूर्ण अंदाज़ में कहा मैं तो कोई अपमानित नहीं हुआ। और क्या तुम ने मुझ से भी सम्माननीय किसी और शख़्स को क़तल किया है? अर्थात मुझे तो इस में कोई अपमान महसूस नहीं हो रहा। फिर अबुजहल ने पूछा कि मुझे बताओ कि मैदान किस के हाथ में रहा। फ़तह और कामयाबी किस के हाथ में रही ? तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ने जवाब दिया कि अल्लाह और इस के रसूल की फ़तह हुई।

एक दूसरी रिवायत में यह भी है कि अबुजहल ने कहा कि इस अर्थात हज़रत मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह बात भी कहना कि मैं सारी ज़िन्दगी उस का दुश्मन रहा और आज इस वक़्त भी मैं इस की दुश्मनी और शत्रुता में चरम तक हूँ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि ने अबुजहल का सिर क़लम किया और इस का सिर लेकर जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस तरह मैं अल्लाह के नज़दीक समस्त नबियों से ज़्यादा सम्मान्नीय और मुकर्रम हूँ और मेरी उम्मत अल्लाह के नज़दीक बाक़ी सारी उम्मतों से ज़्यादा सम्मान्नीय और मुकर्रम है इसी तरह इस उम्मत का फ़िरऔन बाक़ी तमाम उम्मतों के फिरऔनों से ज़्यादा सख़्त और मुतशद्दिद है और इस की वजह यह है कि

حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ

(यूनुस:91)क़ुरआन शरीफ़ में सूर: यूनुस में आया है कि जब उसे ग़र्क़ाबी ने आ लिया तो उसने कहा मैं ईमान लाता हूँ कि कोई माबूद नहीं मगर वह जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए। जबकि इस उम्मत का फ़िरऔन दुश्मनी और कुफ्र में बहुत बढ़कर है। जिस तरह कि मरते हुए अबुजहल की बातों से भी ज़ाहिर होता है। इस के इलावा रिवायतों में यह भी ज़िक्र मिलता है कि अबुजहल की हलाकत की ख़बर मिलने पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबुजहल का सिर देखने पर फ़रमाया कि اَللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ कि अल्लाह वह ज़ात है जिसके सिवा और कोई माबूद नहीं। इसी तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीन बार यह फ़रमाया اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَعَزَّ الْاِسْلَامَ وَاَهْلَهٗ कि हर किस्म की तारीफ़ के योग्य अल्लाह है जिसने इस्लाम और इस के मानने वालों को इज़्ज़त दी। इसी तरह यह ज़िक्र भी मिलता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यक़ीनन हर उम्मत का एक फ़िरऔन होता है और इस उम्मत का फ़िरऔन अबुजहल था जिसे अल्लाह तआला ने बहुत ही बुरे अंदाज़ में क़तल करवाया।

(शरह अज़र्रकानी अलल मवाहिब लदुनिया जिल्द 2 पृष्ठ 297-298 दारुल कुतुब अल्इिल्मिया बेरूत 1996 ई)

हज़रत मुआज़ बिन अमरो बिन जमूह रज़ि की वफ़ात हज़रत उसमान रज़ि के दौर में हुई।

(अलासाबा फ़ी तमीईज़स्सहाबा जिल्द 6 पृष्ठ 114, मआज़ बिन अमरो बिन जमूह, दारुल कुतुब अल्इिल्मिया बेरूत 1995 ई)

ख़लीफ़ा बिन ख़य्यात् बयान करते हैं कि मुआज़ बिन अमरो बिन जमूह रज़ि को बदर के दिन एक ज़ख़्म लगा था। आप उस के बाद हज़रत उसमान रज़ि के ज़माना तक बीमार रहे। फिर मदीना में वफ़ात पाई। हज़रत उसमान रज़ि ने आप का जनाज़ा पढ़ा और आप जन्नतुल बक़ी में मदफ़ून हुए।हज़रत अबू हुरैरह रज़ि से रिवायत है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुआज़ बिन अमरो बिन जमूह रज़ि क्या ही अच्छा शख़्स है।

(अलमुसतदरक अलस्सहीहैन लिल्हाकिम जिल्द 4 पृष्ठ 140-141 ,ज़िक्र मनाक़िब मआज़ बिन अमरो बिन अलजमूह हदीस 5895-5897 दारुल फ़िकर बेरूत 2002 ई)

अल्लाह तआला हज़ारों हज़ार रहमतें नाज़िल फ़रमाए उन लोगों पर जो अल्लाह तआला और इस के हबीब की मुहब्बत में डूब कर उनकी रज़ा को हासिल करने वाले बने।

नमाज़ के बाद में एक जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा जो आदरणीया मलिक सुलतान हारून ख़ान साहिब का है जिनकी 27 मार्च को इस्लामाबाद में वफ़ात हुई थी। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। उनके बड़े बेटे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह के दामाद भी हैं। छोटी बेटी से ब्याहे हुए हैं । मलिक सुलतान हारून साहिब पैदाइशी अहमदी थे। उनके पिता का नाम कर्नल मलिक सुलतान मुहम्मद ख़ान साहिब था जिन्हों ने 23 साल की उम्र में 1923 ई में हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के हाथ पर बैअत की थी और अपने ख़ानदान में अकेले अहमदी थे। फिर उनकी शादी हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह ने ही मुहतरमा आईशा सिद्दीक़ा साहिबा पुत्री चौधरी फ़तह मुहम्मद साहिब स्याल के साथ करवाई। और यह ख़ानदान पंजाब के सम्मान्नीय ख़ानदानों में से और बड़े नवाब ख़ानदानों में से था। मलिक अमीर मुहम्मद ख़ान जो मग़रिबी पाकिस्तान के गवर्नर रहे हैं, नवाब काला बाग़ के नाम से मशहूर थे वह उनके वालिद कर्नल मुल्क सुलतान मुहम्मद साहिब के, चचेरे भाई थे। उनके दादा का नाम मलिक सुलतान सुर्ख़रु ख़ान था। और इन दिनों में बर्तानवी बादशाहत थी जब इंडिया और पाकिस्तान कॉलोनी थे। उनको नवाबी की वजह से बादशाह के यहाँ एक मुक़ाम भी हासिल था। इन को अपने बेटे मुल्क सुलतान

मुहम्मद ख़ान साहिब के चार साल बाद अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ नसीब हुई। बावजूद उस के कि दुनियादार लोग थे लेकिन सआदत थी, फ़ितरत थी कि धर्म की तरफ़ रुजहान हुआ और अल्लाह तआला ने इस सआदत की वजह से उनको अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

सुलतान हारून ख़ान साहिब की शादी सबीहा हमीद साहिबा पुत्री चौधरी अब्दुल हमीद साहिब , जो वापडा में जी ऐम होते थे, उनकी बेटी के साथ हुई। ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने उनका निकाह पढ़ाया था और ख़लीफ़तुल मसीह सालस रहमहुल्लाह ने यह भी फ़रमाया कि चौधरी फ़तह मुहम्मद साहिब सयाल रज़ि जो इंग्लिस्तान मिशन के बानी थे, पहले मुबल्लिग़ थे उनके बारे में निकाह के वक़्त यह भी फ़रमाया कि चौधरी फ़तह मुहम्मद साहिब सयाल रज़ि मेरे मुहतरम बुज़ुर्ग थे और उनका मुझ पर बहुत एहसान था। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने फ़रमाया कि मुझे मेरी छोटी उम्र में और ना तजुर्बा वाली उम्र में अपने साथ ले जा कर मेरे तजुर्बे में बड़ी वुसअत के अवसर पैदा किए और देहात में रहने वालों के लिए मेरे दिल में जो लगाव छुपा था इस लगाव को ज़ाहिर होने का मौक़ा भी मुझे चौधरी फ़तह मुहम्मद स्याल के साथ रहने की वजह से मिला। यह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमुहल्ला फ़रमा रहे हैं । फ़रमाते हैं कि अब भी में एक सादा देहाती से , जब मेरी इस से मुलाक़ात हो , बे-तकल्लुफ़ बात करने में ख़ुशी महसूस करता हूँ और वह ख़ुशी में एक शहरी से मुलाक़ात के वक़्त महसूस नहीं करता क्योंकि शहरियों को तकल्लुफ़ की आदत होती है और उनकी इस आदत की वजह से उनसे मुलाक़ात के वक़्त बग़ैर जाने बूझे हम भी तकल्लुफ़ करना शुरू कर देते हैं। फ़रमाते हैं कि बहरहाल आज मेरे इस मुहसिन बुज़ुर्ग के नवासे मलिक सुलतान हारून ख़ान पुत्र कर्नल सुलतान मुहम्मद ख़ान की शादी है और निकाह है मैं इस का ऐलान करूँगा। और फिर फ़रमाया कि दोस्त दुआ करें कि जिस तरह हमारे बड़ों ने निस्वार्थ और बेनफ़्स ख़िदमत ख़ुदा के धर्म की की है वही जज़्बा ख़िदमत का और वही जज़बा क़ुर्बानी का उनकी नसलों में भी क़ायम रहे और बड़ा स्पष्ट रहे।

(उद्धरित ख़ुत्बाते नासिर जिल्द 10 पृष्ठ 437,440)

अल्लाह तआला करे कि आज जो उन की वफ़ात से यह ज़िक्र हो गया है तो मलिक हारून साहिब मरहूम की औलाद भी अहमदियत और ख़िलाफ़त के साथ इसी समबन्ध को ना सिर्फ क़ायम रखने वाली बल्कि मज़बूत करने वाली हो। उनके तीन बेटे और तीन बेटियां हैं और जैसा कि कहा कि बड़े बेटे सुलतान मुहम्मद ख़ान जो हैं वह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे के दामाद हैं ।

इलाक़े के ग़रीब आवाम की खासतौर पर ज़रूरत मन्द औरतों की बड़ी ख़िदमत करते थे। उनसे बड़ा हुस्ने सुलूक था। औरतों ने बयान किया है कि मलिक साहिब की ज़िन्दगी में हम इलाक़े में अपने आपको महफ़ूज़ समझती थीं और अब उनकी वफ़ात के बाद हमें डर महसूस होने लगा है। अटक के इलाक़े में है, दुश्मनी भी वहां बहुत है और कठोरता भी वहां बहुत है और ग़रीबों को तो कोई हक़ दिया ही नहीं जाता लेकिन बावजूद उस के कि बड़े ज़मींदार थे और इलाक़े के सम्माननीय थे ग़रीबों की बड़ी ख़िदमत किया करते थे।

उनकी बहन राशिदा स्याल साहिबा ,जो कैनेडा में हैं ,कहती हैं कि सुलतान हारून ख़ान मेरा भाई बहुत ख़ूबियों का मालिक था। अहमदियत के लिए इंतिहाई ग़ैरत रखने वाला ,ख़िलाफ़त के लिए जान क़ुर्बान करने वाला , दोस्तों का सच्चा दोस्त और दुश्मनों पर भारी, गरीबों और मिस्कीनों का सहारा था। कहती हैं एक बार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने मुझे एक ख़त में तहरीर फ़रमाया कि तुम्हारे अब्बा (कर्नल सुलतान मुहम्मद ख़ान साहिब) अहमदियत के लिए एक नंगी तलवार थे। और तुम्हारे भाईयों में भी यही रंग पाया जाता है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने एक बार उनको फ़रमाया था, इस इलाक़े में उनकी बड़ी दुश्मनी थी। इस इलाक़े की दुश्मनी का प्राय रिवाज भी ऐसा है। कई जायदादों की वजह से भी दुश्मनी होती है। फिर अहमदियत की वजह से भी दुश्मनी होती थी तो ख़लीफ़ा सालिस रहमहुल्लाह ने उन्हें कहा कि गोलीयां आयेंगी लेकिन ऊपर से गुज़र जाएँगी। तुम्हें इंशा अल्लाह कुछ नहीं होगा। यह लिखती हैं ख़लीफ़ा सालिस रहमहुल्ला के इस कथन को पूरा होते हुए हम ने देखा है। 1977 ई में फ़तह जंग पुलिस स्टेशन पर आप पर क़ातिलाना हमला हुआ। मलिक सुलतान हारून पर गोलियां चलीं और सिर के बालों को झुलसाते हुए गुज़र गईं लेकिन आपको कोई ख़राश तक नहीं आई और अल्लाह तआला ने चमत्कार पूर्ण रंग में महफ़ूज़ रखा। गरीबों और मिस्कीनों के लिए बहुत दयावान थे। यह लिखती हैं कमज़ोरों और बेसहारा लोगों के लिए सहारा थे।

आपके बड़े भाई मलिक सुलतान रशीद ख़ान साहिब कहते हैं कि हमारे अब्बा जान मरहूम के बाद हमारे घराने के असल सरदार वही थे। मेरी हर कोशिश के बावजूद जब भी सिलसिले का कोई काम होता वह हमेशा ख़ाकसार से आगे बढ़ जाते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुलफ़ाए किराम और सिलसिले के सच्चे आशिक़ थे। एक बार 1974 ई की घटनाओं के बाद मेरे सामने एक बड़े ऑफीसर ने उनसे कहा कि आप अपने हज़रत साहिब पर ईमान की क्या हालत पाते हैं तो पंजाबी में उन्हें कहने लगे कि "लोहे वर्गा" अर्थात ख़िलाफ़त पर मेरा ईमान लोहे की तरह मज़बूत है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह की हिजरत के सफ़र में कराची तक हम सफर थे, उनको साथ शामिल होने का मौक़ा मिला और रशीद साहिब लिखते हैं कि मेरे पास जो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह के ख़ुतूत महफ़ूज़ हैं उनमें से एक ख़त में हुज़ूर ने, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने उन्हें अहमदियत का जरनैल और दूसरी जगह अहमदियत के लिए इशक़ और ग़ैरत की नंगी तलवार क़रार दिया। जहां तक रात के नवाफ़िल और क़ुरआन करीम का सम्बन्ध है रशीद साहिब लिखते हैं कि बहुत कम लोगों को इस का ज्ञान होगा क्योंकि उस का ज़िक्र बिल्कुल नहीं करते थे लेकिन दोनों चीज़ों में बेहद बाक़ायदा थे। उनके बड़े भाई लिखते हैं कि शायद मुझे भी पता ना लगता अगर 2016 ई में मेरी शदीद बीमारी में हम दोनों एक ही कमरे में चार महीने तक इकट्ठे ना रहे होते। इन दिनों मेरे लिए उठना बैठना मुश्किल था। एक कमरे में मेरी तीमारदारी करने के लिए मेरे साथ रहते थे तो फिर मैंने उनकी तिलावत और नवाफ़िल की बाक़ायदगी देखी जो काबिले क़दर थी। कहते हैं मैंने उनको कहा कि मेरे लिए एक-आध मुलाज़िम रख लेते। आप जो तकलीफ़ करते हैं तो मुलाज़िम रख लेते हैं। वह मेरी ख़िदमत कर दिया करेगा तो उन्होंने कहा कि जब मैं आपके पास मौजूद हूँ तो मुलाज़िम की क्या ज़रूरत है।

फिर रशीद साहिब लिखते हैं कि बड़े लाभ पहुंचाने वाले वजूद थे। नौ दस स्कूल बनवाए। फिर अगर कभी ऐसा मौक़ा आया कि आय ज़्यादा नहीं हुई और स्कूल के लिए दे नहीं सके तो एक मौक़ा पर उन्होंने ख़ुद मज़दूरों के साथ मज़दूरी भी की और मज़दूरों को कहा कि तुम्हारे से ज़्यादा में काम करता हूँ । यह कोई एहसास नहीं था कि मैं किसी नवाब का बेटा हूँ या इलाक़े का बड़ा ज़मींदार हूँ।

उनकी बेटी महमूदा सुल्ताना काशिफ़ लिखती हैं कि मेरे अब्बू जी का ख़िलाफ़त के साथ इशक़ और वफ़ादारी तो कोई छुपी चीज़ नहीं। होश सँभालते ही अपने वालिद से जो सबक़ उठते बैठते मिला वह यह था कि ख़ुदा तआला पर हमेशा तवक्कुल रखना है और ज़िन्दगी के हर मामला में हमेशा दुआ से काम लेना है। दुआ नहीं तो कुछ नहीं । ख़ुदा तआला पर बे-इंतिहा भरोसा रखते थे। इंतिहाई दिलेर और बहादुर इन्सान थे। अल्लाह तआला के सिवा किसी से नहीं डरते थे। ख़िदमते ख़लक़ में डूबे रहते थे ।

इसी तरह उनके बेटे सुलतान मुहम्मद ख़ान कहते हैं कि मेरे बाप ने बहुत सारा सामाजिक काम किया है। आठ स्कूलों की तामीर करवाई और दो क़ब्रिस्तानों के लिए ज़मीन दी। आठ स्कूलों के लिए ज़मीन भी दी। बेशुमार लोगों को, ग़रीबों को नौकरियां दिलवाईं और उनके काम आते रहे। अल्लाह तआला उनसे रहमत और मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद को भी नेकियों पर क़ायम फ़रमाए और जमाअत और ख़िलाफ़त से जोड़े रखे। जनाज़ा जैसा कि मैंने कहा नमाज़ के बाद पढ़ाऊंगा।

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 04-10 जनवरी 2019 पृष्ठ 5-8)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

पृष्ठ 2 का शेष

साल लाखों लोग जमाअत में शामिल होते हैं। इस साल भी 6 लाख से अधिक लोग जमाअत में शामिल हुए। हमें उम्मीद है कि इंशा अल्लाह एक दिन आएगा कि दुनिया के अधिकतर जमाअत के या इस्लाम के वास्तविक पैग़ाम को समझेगी और इस में शामिल हो जाऐगी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि मैं मसीह मुहम्मदी हूँ और मसीह मूसवी के क़दमों पर आया हूँ और ईसाईयत की जो तरक़्क़ी हुई थी और जब उनको दुनिया में पहचाना जाने लगा और उनकी विरोधता कम हुई तो इस को तीन सौ साल से अधिक का समय लगा था। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इंशाअल्लाह तआला तीन सौ साल का समय नहीं गुज़रेगा कि जमाअत दुनिया के अक्सर हिस्सा पर ग़ालिब होगी, या वास्तविक इस्लाम को मानने वाले लोग होंगे। इसलिए हमें मायूसी कोई नहीं। इस के लिए नस्लों को क़ुर्बानियां देनी पड़ती हैं।

*Koceva Gonca जो पेशा के लिहाज़ से पत्रकार हैं अपने प्रतिक्रियाओं को प्रकट करते हुए लिखती हैं कि मैं पेशा के लिहाज़ से पत्रकार हूँ। बहुत सी कान्फ्रैंसज़ देखी हैं। लोगों के इंटरव्यू किए हैं। मैं कोशिश करूँगी कि जलसा की डोक्योमेनटरी मेरा सबसे अच्छा काम साबित हो और इंटरनैट पर सारी दुनिया उस को देखे। मैं चाहती हूँ कि भविष्य भी आपके साथ मिलकर काम करूँ और जो लोग मेरा प्रोग्राम देखें वे समझ लें कि मुहब्बत कैसे फैलाई जाती है। अहमदियत के बारे में दुनिया को सच्चाई बताऊंगी कि ज़िन्दगी कैसे गुज़ारनी चाहिए। मैंने ज़िन्दगी में इस से पहले इतने अच्छे लोग नहीं देखे जो इस पैमाने पर सकारात्मक विचारों और सकारात्मक सोच को फैला रहे हूँ।

*वफ़द में शामिल एक मेहमान Kostovski Stojancoलिखते हैं: मैं पहली बार जलसा सालाना में 2012 ई मैं शामिल हुआ था और यह मेरा दूसरा जलसा है। अब की बार मुझे दोबारा इन्ही बातों का अनुभव हुआ जो इस से पहले हो चुका था। मैंने आपसे अपने लिए और दूसरे शामिल होने वालों के लिए वास्तविक मुहब्बत देखी। हमारी बहुत अच्छी मेहमान-नवाज़ी की गई। मैं आप का शुक्रगुज़ार हूँ। आपकी इन तक़रीरों का जिनमें आपने इस्लाम की बातें बताएं। आपकी तक़रीरों से मेरे कई सवालों का जवाब मिला। इस से पहले मैं उनका जवाब नहीं जानता था। आपकी यह बात बहुत अच्छी लगी कि देने वाला हाथ लेने वाले हाथ से बेहतर है। जलसा हर लिहाज़ से सम्पूर्ण था।

*Uzunova Dejana वर्णन करती हैं :यह जलसा हर लिहाज़ से मुकम्मल था। विशेष रूप से सारे प्रोग्राम वक़्त पर शुरू हो रहे थे। यह मेरा पहला जलसा है और चाहती हूँ कि दोबारा भी शामिल हूँ। मैं एक परामर्श देना चाहती हूँ कि जलसा पर हमारे जैसे लोग जो मुसलमान नहीं हैं, क्या उन के लिए ज़रूरी है कि सारे प्रोग्राम के दौरान हाल में रहें या उन के लिए प्रोग्राम का एक ऐसा हिस्सा भी हो जिनमें उनको अलग से जलसा और जमाअत का परिचय करवाया जाए।

*Findanka Ristova साहिबा लिखती हैं कि :पिछले साल जलसा ने जो अच्छा असर मुझ पर छोड़ा था उसने मुझे मजबूर किया कि इस साल दोबारा आऊँ और दोबारा उसी गर्मजोशी ने मेरे दिल को भर दिया। जलसा ने मुझ पर बहुत अच्छा असर छोड़ा है। विशेष रूप से सारे काम करने वाले जो बग़ैर ग़लती के अपने फ़र्ज़ों को अदा कर रहे थे। हमें यह महसूस हो रहा था मानो हम घर पर है। इस साल ख़लीफ़ा साहिब की तक़रीर ने मेरे दिल पर असर किया आपका बहुत बहुत शुक्रिया।

*Zorinski Zorancho साहिब लिखते हैं कि: मैं जलसा पर पहली बार बतौर मेहमान और बतौर पत्रकार शिरकत कर रहा हूँ। मैं इस दावत का शुक्रिया अदा करता हूँ जो वसीम साहिब ने मुझे दी। मैं अपने देखने वालों को वे बातें बताना चाहता हूँ जो उन्हें अभी तक मालूम नहीं कि इतनी बड़ी संख्या में लोग प्यार ,मुहब्बत और भाईचारा से वक़्त गुज़ार रहे हैं। मैं इस बात को स्वीकार करना चाहूँगा कि शुरू में मेरा ख़्याल था कि इतनी ज़्यादा संख्या में लोगों के इज्तिमा से समस्या खड़ी होंगी। लेकिन पहले दिन ही मैंने महसूस कर लिया कि यहां ऐसा कुछ नहीं जिस पर ऐतराज़ पैदा हो सके। इसी तरह कहते हैं कि :आपका माटो मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं एक ऐसा वाहिद पैग़ाम है जो बहुत मुक़द्दस पैग़ाम है मानो आसमानी पैग़ाम है। यह माटो सारी इन्सानियत के लिए एक बेहतरीन राहनुमा उसूल है। मैं हुज़ूर के ख़िताबों का शुक्रिया अदा करता हूँ और चाहता हूँ कि ज़्यादा संख्या में लोग आपकी बातें सुनें। मैं बतौर पत्रकार कोशिश करूँगा कि अपने देखने वालों को इस पैग़ाम का एक हिस्सा दिखाऊँ जो मैंने रिकार्ड किया। हुज़ूर से मुलाक़ात ने मुझ पर एक अजीब असर किया। जब मैंने आपका हाथ छुआ तो मेरे जिस्म में बिजली की लहरें दौड़ें। आप में एक रुहानी ताक़त है। अब जब में यह बात कह रहा हूँ दोबारा मेरे जिस्म की वही हालत है। मेरे इल्म में नहीं था कि हुज़ूर के हाथ पर चुम्बन दे सकते हैं। दूसरे लोगों को चुम्बन देते देखा में भी अब यही चाहूँगा।

उन्होंने मुलाक़ात के दौरान सवाल करते हुए कहा: अहमदी मुसलमानों में और दूसरे मुसलमानों में क्या फ़र्क़ है? इसके जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :इस वक़्त जो ज़ाहिरी फ़र्क़ आप देख रहे हैं और आपने यहां आकर भी देख लिया है कि वह यह है कि इस वक़्त अहमिदया मुस्लिम जमाअत जो दुनिया में हर जगह है वह ख़िलाफ़त के साया तले एक ही आवाज़ पर उठने बैठने वाली है और एक ही तरह की सोच रखने वाली है और एक ही शिक्षा पर अनुकरण करने वाली है जबकि दूसरे मुसलमानों के पास ऐसा कोई लीडर नहीं है। हर कोई फ़िर्क़ा अपने अपने राग अलापता रहता है। आजकल के लिहाज़ से तो यही फ़र्क़ है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :इसलिए दुनिया में आप कहीं जाकर देख लें, चाहे वह पश्चमी अफ़्रीक़ा या पूर्वी अफ़्रीक़ा या इंडोनेशिया या जो द्वीपों के रहने वाले हैं या दक्षिण अमरीका या अमरीका या यूरोप या एशिया में रहने वाले हैं सबकी सोच एक ही तरह की होगी और यह बात आपको कहीं नज़र नहीं आएगी कि दुनिया में विभिन्न मुल्कों में रहने वाली विभिन्न कौमें एक ही सोच रखती हूँ जो कि अल्लाह तआला के पैग़ाम को फैलाने और एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने की सोच है। अत: इस एक सोच की वजह यह है कि आँ हज़रत ने चौदह सौ साल पहले पेशगोई फ़रमाई थी कि चौदहवीं सदी में जो मसीह मौऊद और महदी माहूद इमाम आएगा उस को मानना। उस के बाद ख़िलाफ़त का सिलसिला शुरू होगा और मुसलमान उम्मत उसे मानेगी तो उम्मत वाहिदा बन जाएगी। इसलिए बावजूद मुख़ालफ़तों के मुसलमानों में से ही लाखों की संख्या में लोग हमारी जमाअत में शामिल होते हैं और इसी सोच के साथ शामिल होते हैं कि अमन और प्यार और भाईचारा की फ़िज़ा को क़ायम करना है और अल्लाह तआला के हुक्मों को मानना है। इसलिए हम उमीद रखते हैं कि एक वक़्त आएगा जब सारे मुसलमानों की सोच एक हो जाएगी और जब वे जमाअत के पैग़ाम को समझना शुरू हो जाऐंगे।

*Maria Tncevska लिखती हैं कि :मुझे इस बात पर बड़ी ख़ुशी हुई कि जलसा में दूसरी बार शामिल हो रही हूँ। यह एक बहुत बड़ा इज्तिमा और मेरे लिए एक बड़ा रुहानी अनुभव था। जलसा के दौरान एक लम्हा ऐसा भी आया जब मुझे ऐसा महसूस हुआ कि हर तरफ़ से रुहानी लहरें आ रही हैं। एक लम्हा ऐसा भी आया जब सारे लोग इकट्ठे इबादत कर रहे हैं। आपस में प्यार और मुहब्बत पैदा कर रहे हैं। ये सारी चीज़ें इस्लाम के बारे में मेरे विचारों को तबदील कर रही थीं। ये सब कुछ बहुत हैरान करने वाला था कि सारे लोग आपस में जड़े हुए थे। मुझे इस प्रोग्राम में शामिल करने पर आपका बहुत शुक्रिया।

*Daniel Cuklev साहिब लिखते हैं कि: मैं जलसा में दूसरी बार शामिल हुआ हूँ। इस बार मैंने ज़्यादा लोगों को देखा। मेरे ख़्याल में दूसरे देशों से ज़्यादा लोगों ने शिरकत की है। खाना बहुत मज़ेदार था और बहुत अच्छा था। इस तरह मुझ पर इस बात का बहुत असर हुआ कि नमाज़ के समय में 40 हज़ार लोग थे और ऐसी ख़ामोशी थी कि जैसे यहां कोई मौजूद ना हो और यह बात ज़ाहिर करती है कि सारे लोग अपने मज़हब और अपने ख़लीफ़ा की बहुत ज़्यादा इज़्ज़त करते हैं।

*Natalja Krsteska लिखती हैं कि :इस जलसा में शामिल हो कर मुझे मुहब्बत और मानव जाति की हमदर्दी की ऐसी रोशनी मिली जो मेरी राहनुमाई बनी। हम सब ख़ुदा को अपने कर्मों के माध्यम से पा सकते हैं। लेकिन हमें चाहिए कि ख़ुदा की जमाअत के साथ इताअत करें ताकि ये दुनिया बेहतर जगह बन सके। मैं दूसरी बार जलसा में शामिल होने को अपनी ख़ुश क़िस्मती समझती हूँ।

*Adem Vejselovलिखते हैं कि: हमने मक़दूनिया से जलसा के लिए बस में सफ़र किया। सफ़र भी वक़्फ़ों के साथ अच्छा रहा। मुझे जलसा के उद्घाटन पर झंडा लहराने की तक़रीब बहुत अच्छी लगी। हुज़ूर अनवर के ख़िताबों जिनमें आपने अहमिदयों को उनकी ज़िम्मेदारियों की तरफ़ ध्यान दिलाई। जमाअत के मक़सद को वर्णन फ़रमाया। इस्लामी शिक्षा को बहुत उम्दा तौर पर वर्णन फ़रमाया। तीनों दिन मैंने तक़रीरें सुनें। मुझे अब महसूस हो रहा है कि मुझे अब जाकर इल्म हुआ है कि वास्तविक मुसलमान कैसा होना चाहिए। एक मुसलमान को ग़ैर मुस्लिमों से कैसा सम्बन्ध रखना चाहिए। यह जलसा मेरे लिए सीखने का बहुत दुर्लभ मौक़ा था।

*एक मेहमान औरत ने सवाल किया कि आपका बहेसीयत ख़लीफ़ा जो काम है वह बड़ा मुश्किल काम है। आप किस तरह यह कर पाते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :बस अल्लाह तआला करवा

देता है। यह काम इन्सानी कोशिशों से नहीं हो सकता। अल्लाह के काम अल्लाह ही करवाता है। यह लोग तो पाँच दिन काम करके दो दिन सप्ताह के अन्त में ले लेते हैं या छ: दिन काम के बाद एक दिन सप्ताह के अन्त का ले लेते हैं , लेकिन मेरे लिए कोई सप्ताह का अन्त नहीं है।

*एक मेहमान ने सवाल किया कि इस वक़्त पाकिस्तान में जो इमरान ख़ान की हुकूमत आई है , क्या उस के आने से अहमिदयों के हालात बेहतर हो सकते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :जब तक अहमिदयों के बारे में जो क़ानून है जो 1974 ई में क़ौमी असैंबली ने पास किया था कि अहमदी मुसलमान नहीं हैं और इस को बाद में ज़िया उल-हक़ ने आकर इस में और अधिक परिवर्तन कर के इस को इस तरह बनाया कि अहमिदयों की कोई आवाज़ नहीं हो सकती, अहमदी अपने आपको मुसलमान नहीं कह सकते , अहमदी एक दूसरे को सलाम नहीं कर सकते, अहमदी बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ सकते और इस तरह के अजीब और बेहूदा किस्म के क़ानून हैं जब तक वह क़ायम हैं कोई भी हुकूमत आ जाए वह कुछ नहीं कर सकती क्योंकि इन क़ानूनो की वजह से मुल्ला आजकल ज़ोर में है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जहां तक इमरान ख़ान का सम्बन्ध है तो इस को भी इसी क़ानून के तहत हुकूमत चलानी होगी और मौलवी का ज़ोर है। यहां तक कि पिछले दिनों मैं इमरान ख़ान ने एक आर्थिक तरक़्क़ी के लिए एडवाइज़री कौंसिल बनाई थी। इस में एक बहुत अच्छा अहमदी इक्नोमिसट जो दुनिया में माना हुआ है और अमरीका में एक यूनिवर्सिटी में पढ़ा रहा है इस का नाम भी शामिल कर लिया। इस का नाम शामिल करने पर मुलला ने इतना शोर मचाया कि तुम ने यह कादयानी को शामिल कर लिया है और हम इस को बर्दाश्त नहीं कर सकते। यद्यपि पहले इमरान ख़ान के मिनिस्टर्ज़ ने उस को resist किया और कहा कि हमने उसे किसी इस्लामी नज़रियाती कौंसिल में तो शामिल नहीं किया। हम ने तो आर्थिक तरक़्क़ी की एक कौंसिल में शामिल किया है और उसे कमेटी का एक मैंबर बनाया है। लेकिन मुल्ला नहीं माने और आख़िर इमरान ख़ान की हुकूमत को मौलवियों के सामने घुटने टेकने पड़े और फिर उन्होंने इस इक्नोमिसट को मजबूर किया कि अब resign कर दो या हम तुम्हें हटा देंगे। तो यह है पाकिस्तान में इमरान ख़ान की हुकूमत के इन्साफ़ की ताज़ा मिसाल जो हम देख रहे हैं।

मेसेडोनिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर अदा अल्लाह तआला से यह मुलाक़ात 7 बज कर 40 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर वफ़द के मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया।

अल्बानिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार मुल्क अल्बानिया से आने वाले वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाक़ात शुरू हुई। अल्बानिया से इस साल 43 लोगों पर आधारित वफ़द जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुआ।

*एक मेहमान ने निवेदन किया कि मेरे यहां जलसा पर आने के दो उद्देश्य थे। एक यह कि मेरे दो बेटों ने बैअत की है ,मैं देखना चाहता था कि वे किस जगह पर गए हैं और जलसा देखूं दूसरा यह कि जर्मनी एक तरक़्क़ी करना वाला देश है। इस देश को भी देखूं। अब यहां आकर मैंने देखा है अब मुझे अपने बेटों के बारे में कोई फ़िक्र नहीं है वे दोनों सही जगह पर गए हैं और आपकी जमाअत के मैंबर हैं अब मैं भी बहुत जल्द आपकी जमाअत का मैंबर बनूँगा। महोदय ने कहा कि हम ऐसी जगह से आए हैं जहां साठ साल तक मज़हब पर पाबंदी थी। अब नई नस्ल ने क़बूल कर लिया है। पुरानी नस्ल को कुछ वक़्त लग रहा है। कम्यूनिज़म की वजह से मज़हब पर पाबंदी रही है इस वजह से बाप अभी तक अहमदियत क़बूल ना कर सका। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए।

*अल्बानिया से आने वाली एक औरत वकील ने निवेदन किया कि जमाअत अल्बानिया के कानसटी टीयूशन के बारे में काम किया है और अब मैं जलसा देखने आई हूँ। जलसे का प्रबन्ध बहुत अच्छा था। इतनी बड़ी संख्या थी और किसी किस्म की कोई कमी नहीं थी। ऐसा लग रहा था कि शहद की मक्खियों का छत्ता है और हर चीज़ को अपनी जगह पर रखी हुई है। इस बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। मैं इस बात से भी बहुत प्रभावित हुई हूँ कि किस तरह सब लोग ख़लीफतुल मसीह के अनुकरण में नमाज़ पढ़ रहे थे और रो रहे थे। मैं उमीद करती हूँ कि ख़ुदा तआला की मदद के साथ में भी बहुत जल्द इस जमाअत का हिस्सा बनूंगी।

*एक अहमदी नौजवान ने निवेदन किया कि मैं दूसरी बार जलसा पर आया हूँ। जब पिछले साल आया था तो उस वक़्त अहमदी नहीं था। अब मैं अहमदी हो चुका हूँ और एक अहमदी की हैसियत से आया हूँ इस वक़्त में इंजीनियरिंग की शिक्षा हासिल कर रहा हूँ। पार्ट टाइम फोटोग्राफी करता हूँ।

*एक शख़्स ने अपने लिए दुआ की दरख़ास्त करते हुए निवेदन किया कि मेरे लिए दुआ करें कि मैं एक अच्छा मोमिन बन सकूं और रुहानी तौर पर और व्यावहारिक रूप से ख़ुदा के क़रीब आ सकूं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :ख़ुदा आप की दुआएं और इच्छाओं को क़बूल फ़रमाए।

*अल्बानिया से आने वाले एक अहमदी दोस्त Bekimbici साहिब ने निवेदन किया: मैं 2004 ई में बैअत कर के अहमदियत में शामिल हुआ था। मैं जर्नलिस्ट हूँ। जलसा सालाना मेरी ज़िन्दगी का बहुत प्रमुख event होता है। इतना प्रमुख कि इस बार में अगस्त तक एक अख़बार में काम किया करता था और वह काम मैंने छोड़ा और उस के बाद मुझे काम की तलाश में तीन, चार ऑफ़र्ज़ मिले और मैंने सबको यही कहा कि अगर मुझे काम पर रखना है तो 15 सितंबर तक मेरा इंतज़ार करना ज़रूरी होगा क्योंकि मेरा एक फ़रीज़ा जिस पर में काम को प्राथमिकता नहीं दे सकता और वह फ़रीज़ा यह था कि मैं जलसा सालाना में शामिल हूँ। अत: मैं जलसा सालाना पर आया हूँ और मुझे उमीद है कि वापस जाकर मुझे कोई ना कोई काम मिल जाएगा। यह मेरा यक़ीन है कि अगर इन्सान मेहनत करे तो उसे अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ज़रूर कोई काम मिल जाता है। बहरहाल मैं यहां शामिल हुआ हूँ और जलसा सालाना मेरे लिए एक महान प्रोग्राम था। ये तीनों दिन मेरे लिए प्रभावित करने वाले थे।कहने लगे: मेरी नज़र में जलसा सालाना एक रुहानी खाना है जिस के लिए मुझे हर साल यहां आना चाहिए , चाहे उस के लिए बहुत अधिक कोशिशें भी करनी पढ़ें। जलसा के इलावा हुज़ूर के साथ चौथे दिन जो मुलाक़ात होती है इस का एक अपना महत्तव है यद्यपि वह कुछ मिन्ट ही हूँ। मुलाक़ात में हम अपने आक़ा के साथ बैठ कर बरकतें हासिल करते हैं। अल्लाह तआला से दुआ है कि अगले साल मुझे यू.के के जलसा में भी शिरकत करने की तौफ़ीक़ मिले। मैं ये भी कहना चाहूँगा कि जलसा हर साल बेहतरी की तरफ़ जा रहा है।

अल्बानिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर अदा अल्लाह तआला से यह मुलाक़ात 8 बजे तक जारी रही। बाद में वफ़द के मेम्बरों ने तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

हंगरी और क्रोशिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद मुल्क हंगरी और क्रोशिया से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

*हंगरी से इमीग्रेशन डिपार्टमैंट में काम करने वाले एक दोस्त आए थे ,उन्होंने निवेदन किया कि बहुत अच्छी यादें यहां से लेकर जा रहा हूँ। आपका जलसा बहुत उत्तम था। ख़ुदा तआला आपको बहुत तरक्कियां दे।

*एक औरत ने निवेदन किया कि यह मेरा जर्मनी का पहला जलसा सालाना है इस से पहले में तीन बार यू.के के जलसा सालाना में शामिल हो चुकी हूँ और एक बार कादियान जलसा में भी शामिल हुई थी। यहां इस जलसा में हर प्रबन्ध बहुत उम्दा था। रिहायश , ख़ुराक , सफाई , तक़ारीर , हर प्रोग्राम बहुत उत्तम था। हमें ख़ुदा तआला तक पहुंचने के लिए एक हबलुल्लाह चाहिए। आज अहमदियत ही है जो हमें यह हब्लुल्लाह दे रही है। हुज़ूर अनवर पर बहुत बोझ है। ख़ुदा तआला ने आपको चुना है। आपने यह बोझ बर्दाश्त करना है। हम हुज़ूर के लिए दुआ करते हैं अल्लाह तआला हुज़ूर अनवर के साथ हो। मैं हर जगह जलसों मैं विभिन्न क़ौमों के लोगों से मिली। विभिन्न ज़बानें बोलने वाले लोग थे। हर जगह बड़ा अच्छा अनुभव हुआ। यू.के में तो खुली जगह पर जलसा होता है और अस्थायी तौर पर एक शहर बसाया जाता है।

*हंगरी से एक प्रोटैस्टैंट चर्च के पादरी Gabor Tamas साहिब भी जलसा पर आए थे। यह मज़हबी कामों के इलावा जन कल्याण के कामों में बहुत अग्रणी हैं। यह अपने प्रतिक्रियाओं को प्रकट करते हुए कहते हैं: मैं तो ईसाई हूँ मगर आपके जलसा पर जाकर मुझे ईमानी ताज़गी मिलती है और मैं ताज़ा-दम हो कर लौटता हूँ। यह चार दिन सारा साल के कामों में मददगार होती है। महोदय की वजह से ना केवल उनके गांव बल्कि उनके सारे परिचित दोस्तों में वाक़फ़ीयत हुई और जमाअत का पैग़ाम पहुंचाने के नए रास्ते खुले।

मुबल्लिग़ सिलसिला हंगरी लिखते हैं कि कुछ माह पहले जब इन पादरी साहिब की माता की वफ़ात हुई। कुछ ख़ुद्दाम के साथ जनाज़ा में शिरकत के लिए उनके गांव पहुंचे। बहुत सर्दी और धुंद की वजह से सफ़र मुश्किल था। हमें देखकर यह बहुत ख़ुश भी हुए और हैरान भी। तदफ़ीन के बाद नियम के अनुसार गांव के कम्यूनिटी हाल में ताज़ियत की तक़रीब हुई जिसमें गांव के काफ़ी लोग और कुछ

दूसरे इलाक़ों से आने वाले सम्माननीय भी शामिल थे। इस तक़रीब में शुक्रिया अदा करते हुए सारे गांव के सामने कहा कि अहमिदया मुबल्लिग़ और अहमिदया कम्यूनिटी ही मेरे दोस्त और ख़ैर-ख़्वाह हैं। जब मैं बीमार हुआ , जब मेरा ऐक्सिडन्ट हुआ और मैं हस्पताल में था तब सिर्फ यह जमाअत ही मेरा हाल पूछने आई थी। अब मेरी माता फ़ौत हुईं तो फिर भी यही जमाअत है जो संवेदना करने आई है। यही लोग मेरे वास्तविक दोस्त और ख़ैर-ख़्वाह हैं। ऐसे अवसर पर मैंने कभी अपने लीगज़ और अच्छे दोस्तों को भी नहीं देखा। इस तरह गांव के पच्चास साठ लोगों का ध्यान हमारी तरफ़ हुआ और रीफ़रीशमनट का सारा वक़्त जमाअत का परिचय करवाने का मौक़ा मिला।

*हंगरी से Varga Andars साहिब भी जलसा मेंशरीक हुए। यह रिफ्यूजी कैंप के दफ़्तर में काम करते हैं। अपनी प्रतिक्रियाओं को प्रकट करते हुए कहते हैं: यह जलसा ऐसा मौक़ा है जैसा कि इन्सान किसी महान चीज़ को देखे तो हैरानी के साथ साथ अन्दर से कपकपी भी तारी होती है। बिलकुल ऐसे ही जब आप लोग नारे लगाते तो ऐसा लगता कि अभी इमाम हुक्म देगा और आप लब्बैक कहते हुए कुछ कर गुज़रोगे, जैसा कि हुक्म की प्रतीक्षा में बैठे हो। शुरू में तो बहुत ख़ौफ़ महसूस हुआ। हंगरी में ऐसी भीड़ तो दौर की बात , सौ लोग भी हूँ तो एक घंटा में ही कोई लड़ाई हो जाए। लेकिन हज़ारों लोगों का ऐसी पुर अमन भीड़ मैंने आज से पहले कभी नहीं देखी।

*हंगरी से सोशल वर्कर Csicsek Agota साहिबा भी जलसा में शामिल हुईं। यह हंगरी में नए आने वालों के सारी इबतिदाई कामों में मदद करती हैं। काफ़ी समय से उनको दावत दी जा रही थी। इस साल जलसा में शरीक हुईं। जलसा के अच्छे प्रबन्ध और मेहमान नवाज़ी पर यह हुज़ूर अनवर और जमाअत का शुक्रिया अदा करती रहीं। कई बार इस बात को प्रकट करती रहीं कि इतने उत्तम और सभ्य मुसलमानों के इज्तिमा में शिरकत का यह पहला मौक़ा है। महोदया अपने काम की वजह से शहर के सारी क्षेत्रों में जानी-पहचानी शख़्सियत है। अल्लाह करे उनके माध्यम से और अधिक सम्पर्क की राहें खुलीं।

*हंगरी से एक रिफ्यूजी कैंप के माली उमूर की निगरान Veszpremi Illona साहिबा भी जलसा में शरीक हुई थीं। उन्होंने जलसा के प्रबन्ध इत्यादि देखने के बाद सवाल किया कि जलसा का इतना ज़्यादा ख़र्च कैसे चलाया जाता है। उनको जमाअत के ख़िदमत और चन्दों के निज़ाम का बताया गया। जिस पर यह बहुत हैरान हुईं। उन्होंने जलसा के बारे में से अपने प्रतिक्रियाओं को प्रकट करते हुए कहा: जलसा एक ऐसी तक़रीब है जो इन्सान को अंदर से धो कर हल्का फुलका बना देता है। जैसे शुरू में बच्चे को नहाने से ख़ौफ़ आता है। मगर वह उस के लिए निहायत ज़रूरी होता है। ऐसी ही अवस्था इन्सान की जलसा को देखकर होती है।

*हंगरी के वफ़द में यमन से सम्बन्ध रखने वाली एक मैडीकल डाक्टर वफ़ा हसन अहमद साहिबा भी शामिल थीं। यह जलसा में शामिल हुईं तो बड़ी पुर जोश थीं। जलसा के दूसरे दिन लजना से हुज़ूर अनवर का ख़िताब उन्होंने औरतों की मार्की मैं सुना। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के मेहमानों से ख़िताब के लिए उन्हें मर्दाना हाल में भिजवाया गया। यह कहने लगीं कि मैं लजना मार्की मे ंही ख़ुश थी। मुझे वापस लजना की तरफ़ छोड़ने का प्रबन्ध कर दें। जामिया के विज़ट के दौरान बड़े शौक़ से लाइब्रेरी देखी और बुनियादी इस्लामी किताबें देखें। बाहर आकर कहने लगीं कि हर आयत यथा स्थान है और साथ ही जामिया की इमारत पर लिखी आयत की तरफ़ इशारा किया، وَاَشۡرَقَتِ الۡاَرۡضُ بِنُوۡرِ رَبِّهَا देखो यह आयत कैसे बिलकुल सही जगह पर लिखी हुई है। मुलाक़ात के बाद कहने लगीं अभी प्यास बाक़ी थी मैं और भी बहुत कुछ कहना चाहती थी।

मुबल्लिग़ सिलसिला लिखते हैं कि सारे रास्ता उनकी पत्नी से हुज़ूर अनवर से मिलने के आदाब जानती रहें और सोचती रहीं कि जलसा की क्या बातें करनी है। अभी से अगले साल के प्रोग्राम बना रही हैं कि अपनी बहन और बेटे को भी लेकर आना है।

*क्रोशिया से आने वाले एक मेहमान आदम साहिब अपनी प्रतिक्रियाओं को प्रकट करते हुए वर्णन करते हैं कि दोनों जलसा अर्थात यू.के और जर्मनी में दो विभिन्न जगहों पर विभिन्न प्रबन्ध देखकर हैरत होती है कि किस उम्दा तरीक़ पर काम करने वाले इस जलसा सालाना को चलाते हैं। इन प्रबन्ध को देखकर मेरे अंदर भी यह जज़बा पैदा हुआ है कि जमाअत के कामों में बढ़ चढ़ के हिस्सा लूं। खासतौर पर इतफ़ाल को पानी की डयूटी देते हुए देखकर बहुत ख़ुशी हुई कि ये छोटे बच्चे इस उम्र से ही किस इख़लास से काम करते हैं।

आदम साहिब की पत्नी नासिहा साहिबा भी जलसा पर आई थीं,यह कहती हैं:यह मेरा छटा जलसा है और सारी दुनिया से आए हुए अहमिदयों से मिलकर बहुत कुछ सीखने का मौक़ा मिलता है। जलसा यक़ीनी तौर पर इस्लाम की शिक्षाओं को अहसन रंग में प्रस्तुत करता है और एक ऐसी तस्वीर दिखाता है कि अगर इस्लामी शिक्षाओं पर अनुकरण किया जाए तो किस तरह की भावनाएं पैदा होती हैं और कैसी कैफ़ीयत छा जाती है।

*क्रोशिया से ही मिशिल साहिब भी जलसा में शामिल हुए। यह ग़ैर अहमदी दोस्त हैं और जलसा पर बतौर अनुवादक डयूटी देते रहे। यह अपने प्रतिक्रियाओं को प्रकट करते हुए कहते हैं: जलसा के प्रबन्ध देखकर हैरत होती है कि किस उत्तम तरीक़े पर अहमदी कमा करने वाले जलसा सालाना के प्रबन्ध को कर रहे हैं। इसी तरह हिफ़ाज़ती प्रबन्ध को देखकर बहुत ख़ुशी हुई है।

हंगरी और क्रोशिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात 8 बजकर 20 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर इन दोनों वफ़दों के सारे मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सैभाग्य पाया।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए जहां तीन फ़ैमिलीज़ ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

*इन मुलाक़ात करने वालों में मुल्क आज़रबाईजान से एक नई बैअत करने वाले आइताज आज़ामो दूदवा साहिबा भी शामिल थीं , जिन्होंने पिछले साल दिसंबर 2017 ई में बैअत की थी। वह वर्णन करती हैं:जब हुज़ूर अनवर का पहले रोज़ का ख़ुतबा जुमा सुना जिस में हुज़ूर अनवर ने कुछ कमियों का ज़िक्र कर के तर्बीयत के बारे में से कुछ नसीहतें फ़रमाई थीं। तो मुझे लगा कि शायद तर्बीयत के बारे में से कुछ अच्छी चीज़ें देखने को ना मिलीं। लेकिन यह बात मेरी सोच तक ही रही क्योंकि जलसा के आख़िर तक मुझे यही महसूस हुआ कि हर एक हुज़ूर अनवर के इरशाद पर सौ फ़ीसद अनुकरण कर रहा है। इतनी बड़ी संख्या में लोगों को खाना खिलाना और फिर वक़्त पर खाना मिलना, किसी किस्म की कोई धक्कम पेल नहीं थी। कुछ ग़ैर जमाअत भी इस प्रबन्ध से बहुत प्रभावित थे। प्यारे हुज़ूर की तक़ारीर मेरे लिए मार्ग दर्शन थीं। मैं यक़ीन से कह सकती हूँ कि जो भी अक़ल वाला हुज़ूर अनवर के ख़िताबों को सुनेगा वे ज़रूर इस्लाम की ख़ूबियों को स्वीकार करने वाला हो जाएगा। रूहानियत का अनुभव करने और इस में तरक़्क़ी करने के लिए जलसा सालाना एक Ideal Event है। मैंने हुज़ूर अनवर के चेहरा पर और चेहरे के इर्दगिर्द नूर ही नूर देखा है। मैं बहुत ख़ुश हूँ और भावनाओं पर क़ाबू नहीं रख पा रही।

मुलाक़ातों के इस प्रोग्राम के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ लाए, जहां तक़रीब आमीन का आयोजन हुआ।

तक़रीब आमीन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नीचे लिखे 33 बच्चों और बच्चीयों से क़ुरआन करीम की एक एक आयत सुनी और आख़िर पर दुआ करवाई।

प्रिय राना जाहिज़ अहमद, मुबश्शिर अहमद शाबिल, फ़रहान अहमद क़मर,असमीर अहमद ख़ान, अहमद सफ़वान , इब्राहीम सरोया, मशहूद फ़ारान शाहिद, ख़ालिक़ अहमद, अब्दुल अहद, साहिल इक़बाल, मुवह्हिद अहमद, जिब्रील वहीद राना, आमिर अहमद, दानयाल सिबतीन अहमद, शायान अहमद, मसरूर काशिफ़ , नायल रहमान पाशा, मिर्ज़ा मामून अहमद, ज़ीशान अली सुधन, तौहीद अहमद।

प्रिया अलीशा मुनव्वर सरोया, आमिरा मिलक, फ़रीहा मुनव्वर, अबीरा सिद्दीक़,तहरीम ताहिर, अरोसा नईम , ज़रीश, सुनबल अहमद, ताशफ़ा महक रिज़वान, अनाबीह अहमद, लिनता अहमद, अरमान ख़ान , मनाहल अहमद।

तक़रीब आमीन के बाद हुज़ूर अनवर ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

11 सितंबर 2018 (दिनांक मंगल)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बज कर 50 मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दफ़्तरी कामों को पूरा करने में व्यस्त रहे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 9 May 2019 Issue No. 19

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

विभिन्न देशों से प्राप्त होने वाली डाक ख़तों और रिपोर्टसों को देखा और हिदायतों से नवाज़ा।

फ़ैमली मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े दस बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमलीज़ मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज सुबह के इस प्रोग्राम में 41 फ़ैमलीज़ के 133 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। जर्मनी की 15 जमाअतों से ये फ़ैमलीज़ और दोस्त मुलाक़ात के लिए पहुंचे थे। इन 41 फ़ैमलियों में से 23 फ़ैमिलीज़ ऐसी थीं जो निम्नलिखित 13 देशों से जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने के लिए पहुंची थीं और आज मुलाक़ात का सौभाग्य पा रही थीं। अबू ज़हबी, पाकिस्तान, नाईजर, बुलग़ारिया, लाइबेरिया, नाईजीरिया, गेमबिया, बोरकीना फासो, यू.ए. ई, टोगो, तनज़ानिया , कांगो किंशासा और ताजिकस्तान।

आज सुबह के इस सैशन में निम्नलिखित बीस देशों से आने वाले 35 मुबल्लग़ीन किराम ने भी अपने प्यारे आक़ा से व्यक्तिगत तौर पर मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। कांगो बराज़ा वेल, पाकिस्तान, नाईजीरिया, टोगो, यवगनडा, नाईजर, यूक्रेन, कैनेडा, बेनिन, कज़ाकिस्तान, बुलग़ारिया, रशिया, सेरालियोन, माली, पुर्तगाल, तनज़ानिया, बोर कीना फासो, किर्गीज़स्तान, घाना और मारीशस।

इस के अतिरिक्त अन्य 19 लोगों ने भी अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन दोस्तों का सम्बन्ध बुलग़ारिया , पाकिस्तान, सेनीगाल, स्वीडन, यूक्रेन, माली और फ्रांस से था। इस तरह कुल 187 लोगों ने मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन सभी लोगों और फ़ैमलीज़ ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कृपा करते हुए शिक्षा हासिल करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए। मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 1 बजकर 45 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

आमीन की तक़रीब का आयोजन

2 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ लाए और प्रोग्राम के अनुसार आमीन की आयोजन शुरू हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नि-म्नलिखित 30 बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन करीम की एक एक आयत सुनी और आख़िर पर दुआ करवाई।

प्रिय अदील अहमद बट, रसब अहमद स्याल, उम्र अहमद नूर, माहद अरशद, अताउल शाफ़ी राना, मुईद अहमद, दानिश अहमद, ऐआन अहमद शाह, मशहूद अहमद, नोमान उम्र, ईक़ान अहमद नूर ख़ालिद, आयान अहमद मजोका, लबीक इमरान काहलों, सरमद अहसन, शईर इरशाद, चौधरी सबीह अहमद, शजीअ अहमद, ईक़ान अहमद आदिल। प्रिया मनाल अहमद, तमसीला नफ़ीस, नूरुल ऐन राना, फ़रीहा अली पगराथ, मलीहा एहसान, सोफिया नदीम, ख़िरद जान, हानिया सतवत राँझा, जाज़िबा बट, समरीन अहमद, अनायह एलीज़ा नवाज़, सूबिया अहमद।

इसे के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

फ़ाइननस कमेटी जर्मनी की हुज़ूर अनवर के साथ मीटिंग

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े पाँच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ाइननस कमेटी जर्मनी की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग शुरू हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने चन्दों की इन्कम , ख़र्च, रिज़र्व फ़ंड और विभिन्न आर्थिक मामलों और इस के बारे में मामलों और मस्दिजों की तामीर के बारे में से खर्चों का विस्तार से जायज़ा लिया और कमेटी के मेम्बरों को विभिन्न प्रबन्धकीय हिदायतें दें। ये मीटिंग क़रीबन डेढ़ घंटा सात बजे तक जारी रही।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

काम मूसा अलैहिस्सालम के काम के से थे। उस मूसा के काम तारीफ योग्य ना थे लेकिन क़ुरआन ने मनवाए। मूसा अलैहिस्सालम के ज़माना में यद्यपि फ़िरऔन के हाथ से नजात (बनी) इस्राईल को मिली लेकिन गुनाहों से नजात ना पाई। वे लड़े और कठोर दिल हुए और मूसा पर हमला करने वाले हुए लेकिन हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूरी पूरी नजात दी। रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अगर ताक़त ,शौकत , सल्तनत इस्लाम को ना देते तो मुसलमान मज़लूम रहते और नजात कुफ़्फ़ार के हाथ से ना पाते। अत: अल्लाह तआला ने एक तो यह नजात दी कि स्थायी इस्लामी सलतनत क़ायम हो गई। दूसरा यह कि गुनाहों से उनको नजात मिली। ख़ुदावन्द तआला ने हर दो नक़्शे खींचे हैं कि अरब पहले क्या थे और फिर क्या हुए। अगर हर दोनों नक़्शे इकट्ठे किए जाएं तो उनकी पहली हालत का अंदाज़ा लग जाएगा। अत: अल्लाह तआला ने दोनो नजातें दीं। शैतान से भी नजात दी और ताग़ूत से भी।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 34 से 35 प्रकाशन 2018 क़ादियान)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

दो सवाल और उन के जवाब

हम मुस्लेह मौऊद दिवस क्यों मनाते हैं?

हमारे प्यारे इमाम सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला पालीी बनसरह ालिज़ीज़फरमाते हैं

"कुछ अनजान अहमदी जो विभिन्न स्थानों से ख़तों में लिख देते हैं, यहाँ भी सवाल कर देते हैं कि हम मुस्लेह मौऊद दिवस क्यों मनाते हैं, बाकी ख़लीफ़ा के दिन क्यों नहीं मनाते उन पर स्पष्ट हो गया होगा कि मुस्लेह मौऊद की भविष्यवाणी का दिन हम ईमानों को ताज़ा करने और इस प्रतिबद्धता को याद करने के लिए मनाते हैं कि हमारा उद्देश्य इस्लाम की सच्चाई और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रामाणिकता को दुनिया में स्थापित करना है। यह कोई अपने जन्म या मृत्यु का दिन नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं को स्वीकार करते हुए अल्लाह तआला ने आपकी नस्ल में से एक व्यक्ति को पैदा करने का निशान दिखाया था जो विशेष विशेषताओं पर आधारित था और जिसने इस्लाम की सत्यता दुनिया में साबित करनी थी। और उसके द्वारा जमाअत की प्रणाली के लिए कई और ऐसे रास्ते तय कर दिए गए कि जिन पर चलते हुए बाद में आने वाले भी मंज़िलें तय करते चले जाएंगे।

इसलिए यह दिन हमें हमेशा अपने ज़िम्मेदारी का एहसास करवाते हुए इस्लाम की तरक्की के लिए अपनी गुणों को उपयोग करने की तरफ ध्यान दिलाता है और दिलाने वाला होना चाहिए न कि केवल एक निशान के पूरा होने पर ज्ञान वर्धक और ज़ौकी मज़ा ले लिया। अल्लाह तआला इसकी तौफीक प्रदान करे।

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 11 से 19 मार्च 2009 पृष्ठ 9)

मछली को क्यों जिब्ह नहीं किया जाता?

उत्तर से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने फरमाया कि

इस्लाम ने उन प्राणियों को जिब्ह करने का हुक्म दिया है जिन में ख़ून का संचार होता है और हवा में सांस लेते और ज़िबह करने में यह हिक्मत है कि ख़ून जिसे इस्लाम ने हराम करार दिया है जिस में ज़हर होता है ज़िब्ह से निकल जाता है लेकिन झटका करने की स्थिति में खून शरीर में ही रहता है। वरना इस्लाम को इस से क्या कि जानवर को गले से ज़िबह किया जाए या गर्दन काटी जाए। गर्दन में ऐसी कोशिकाओं होती हैं कि उन पर चोट पड़ने से ही बेहोशी की हालत छा जाती है और दौरान खून रुक जाता है। मछली में चूंकि ख़ून का संचार नहीं होता इस लिए इसे ज़िबह करने की भी ज़रूरत नहीं।

(अल्फ़ज़ल 8अकतूबर 1960 ई पृष्ठ 3)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad